ग़ज़लें

दिल में किसी के राह किए जा रहा हूं मैं
कितना हसीं गुनाह किए जा रहा हूं मैं

दुनिया-ए-दिल[1] तबाह किए जा रहा हूं मैं
सर्फ़े-निगाहो-आह[2] किए जा रहा हूं मैं

फ़र्दे-अमल[3] सियाह किए जा रहा हूं मैं
रहमत[4] को बेपनाह किए जा रहा हूं मैं

ऐसी भी इक निगाह किए जा रहा हूं मैं
ज़र्रों को मेह्रो-माह[5] किए जा रहा हूं मैं

मुझसे लगे हैं इश्क़ की अज़मत को[6] चार चांद
ख़ुद हुस्न को गवाह किए जा रहा हूं मैं

आगे क़दम बढ़ाएं जिन्हें सूझता नहीं
रौशन चिराग़े-राह[7] किए जा रहा हूं मैं

---

१. दिल की दुनिया २. नज़रों और आहों के निमित्त व्यय ३. कर्म-पत्र ४. ईश्वरीय कृपा ५. सूरज और चांद ६. महानता को ७. मार्ग का दीपक

तन्क़ीदे-हुस्न[1] मसलहते-ख़ासे-इश्क़ है[2]
ये जुर्म गाह-गाह[3] किए जा रहा हूं मैं

उठती नहीं है आंख मगर उसके रूबरू
नादीदा[4] इक निगाह किए जा रहा हूं मैं

गुलशन-परस्त[5] हूं मुझे गुल[6] ही नहीं अज़ीज़
कांटों से भी निबाह किए जा रहा हूं मैं

यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूं तिरे बग़ैर
जैसे कोई गुनाह किए जा रहा हूं मैं

मुझसे अदा हुआ है 'जिगर' जुस्तजू का हक़
हर ज़र्रे को गवाह किए जा रहा हूं मैं

---

१. सौन्दर्य (प्रेयसी) की आलोचना २. प्रेम (प्रेमी) के हित में है ३. कभी-कभी ४. अनदेखी ५. वाटिका का पुजारी ६. फूल

किसी सूरत नुमूदे-सोज़े-पिन्हानी[1] नहीं जाती
बुझा जाता है दिल, चेहरे की ताबानी[2] नहीं जाती

नहीं जाती कहां तक फ़िक्रे-इन्सानी[3] नहीं जाती
मगर अपनी हक़ीक़त आप पहचानी नहीं जाती

निगाहों को ख़िज़ां-नाआशना[4] बनना तो आ जाए
चमन जब तक चमन है जल्वा-सामानी[5] नहीं जाती

सदाक़त हो तो दिल सीनों से खिंचने लगते हैं वाइज़[6]
हक़ीक़त ख़ुद को मनवा लेती है, मानी नहीं जाती

जिसे रौनक़ तिरे क़दमों ने देकर छीन ली रौनक़
वो लाख आबाद हो, उस घर की वीरानी नहीं जाती

वो यूं दिल से गुज़रते हैं कि आहट तक नहीं होती
वो यूं आवाज़ देते हैं कि पहचानी नहीं जाती

नहीं मालूम किस आ़लम[7] में हुस्ने-यार देखा था
कोई आ़लम हो लेकिन दिल की हैरानी नहीं जाती

मोहब्बत में इक ऐसा वक़्त भी दिल पर गुज़रता है
कि आंसू ख़ुश्क हो जाते हैं तुग़यानी[8] नहीं जाती

१. भीतरी तपन की अभिव्यक्ति २. दीप्ति ३. मानव-चिंतन ४. पतझड़ से अपरिचित ५. जल्वा दिखाना ६. धर्मोपदेशक ७. अवस्था ८. बाढ़

अगर न ज़ोहरा-जबीनों के[1] दर्मियां गुज़रे
तो फिर ये कैसे कटे ज़िन्दगी, कहां गुज़रे

जो तेरे आरिज़ो-गेसू के[2] दर्मियां गुज़रे
कभी-कभी तो वो लम्हे बला-ए-जां[3] गुज़रे

मुझे ये वह्म रहा मुद्दतों कि जुर्अते-शौक़[4]
कहीं न खातिरे-मासूम[5] पर गरां[6] गुज़रे

हर इक मुक़ामे-मोहब्बत बहुत ही दिलकश था
मगर हम अहले-मोहब्बत[7] कशां-कशां[8] गुज़रे

जुनूं के[9] सख्त मराहिल[10] भी तेरी याद के साथ
हसीं-हसीं नज़र आए, जवां-जवां गुज़रे

मिरी नज़र से तिरी जुस्तजू के सदक़े में
ये इक जहां ही नहीं, सैकड़ों जहां गुज़रे

हुजूमे-जल्वा में[11] परवाज़े-शौक़[12], क्या कहना
कि जैसे रूह सितारों के दर्मियां गुज़रे

खता मुआफ़ ज़माने से बदगुमां होकर
तिरी वफ़ा पे भी क्या-क्या हमें गुमां गुज़रे

---

१. सुन्दरियों के २. कपोलों और केशों के ३. जान के लिए बला (अत्यन्त कठिन) ४. प्रेम-प्रदर्शन का साहस ५. (प्रेयसी के) मासूम दिल पर ६. भारी, अप्रिय ७. प्रेमीजन ८. तेज़-तेज़ ९. उन्माद के १०. मंज़िलें ११. ताबड़तोड़ दर्शनों में १२. प्रेम या लगन की उड़ान

मुझे था शिक्वा-ए-हिज्रां[1] कि ये हुआ महसूस
मिरे क़रीब से होकर वो नागहां[2] गुज़रे

बहुत हसीन मनाज़िर[3] भी हुस्ने-फ़ितरत के[4]
न जाने आज तबीयत पे क्यों गरां[5] गुज़रे

मिरा तो फ़र्ज़ चमन-बन्दी-ए-जहां[6] है फ़क़त[7]
मिरी बला से, बहार आए या ख़िज़ां गुज़रे

कहां का हुस्न कि ख़ुद इश्क़ को ख़बर न हुई
रहे-तलब में[8] कुछ ऐसे भी इम्तिहां गुज़रे

भरी बहार में ताराजी-ए-चमन[9] मत पूछ
ख़ुदा करे न फिर आंखों से वो समां गुज़रे

कोई न देख सका जिनको दो दिलों के सिवा
मुआ़मलात कुछ ऐसे भी दर्मियां गुज़रे

कभी-कभी तो इसी एक मुश्ते-ख़ाक के[10] गिर्द
तवाफ़[11] करते हुए हफ़्त-आस्मां[12] गुज़रे

बहुत अज़ीज़ है मुझको उन्हीं की याद 'जिगर'
वो हादिसाते-मोहब्बत[13] जो नागहां[14] गुज़रे

---

१. वियोग की शिकायत २. अनायास ३. दृश्य ४. प्रकृति के सौन्दर्य के ५. भारी ६. संसार-रूपी बाग़ की बाग़बानी ७. केवल ८. प्रेम-मार्ग में ९. वाटिका का उजड़ना १०. मुट्ठी-भर मिट्टी के ११. परिक्रमा १२. सातों आकाश या सप्त लोक १३. प्रेम-सम्बन्धी दुर्घटनाएं १४. अनायास

जो मसर्रतों में[1] ख़लिश[2] नहीं, जो अज़ीयतों में[3] मज़ा नहीं
तिरे हुस्न का भी क़ुसूर है, मिरे इश्क़ ही की ख़ता[4] नहीं

मिरे जज़्बे-इश्क़ पे[5] रहमतें[6] मुझे बेबसी का गिला नहीं
तिरे जब्रे-हुस्न की[7] ख़ैर हो, मिरे इख़्तियार में क्या नहीं

मिरा ज़ौक़[8] भी मिरा शौक़[9] भी है बुलंद सतहे-अवाम से[10]
तिरा हिज्र[11] तिरा विसाल[12] भी, मिरे दर्दे-दिल की दवा नहीं

जिसे मैं भी ख़ुद न बता सका, मिरा राज़े-दिल है वो राज़े-दिल
जिसे ग़ैर दोस्त समझ सकें, मिरे साज़ में वो सदा[13] नहीं

मिरे दर्द में ये ख़लिश कहां, मिरे सोज़ में ये तपिश[14] कहां
किसी और ही की पुकार है, मिरी ज़िन्दगी की सदा नहीं

वो हज़ार दुश्मने-जां[15] सही, मुझे ग़ैर फिर भी अज़ीज़ है
जिसे ख़ाके-पा[16] तिरी छू गई, वो बुरा भी हो तो बुरा नहीं

वही मैं हूं और वही अंजुमन, मगर आज है मिरा हाल क्या
ये गुमान[17] है कि हक़ीक़तन[18] कोई और तिरे सिवा नहीं

---

१. ख़ुशियों में २. चुभन ३. कष्टों में ४. दोष ५. इश्क़ की भावना पर ६. भगवान की कृपा ७. सौन्दर्य की प्रचंडता की ८. मनोवृत्ति ९. उत्कंठा १०. जनसाधारण के स्तर से ११. जुदाई १२. मिलन १३. आवाज़ १४. गर्मी १५. जान का शत्रु १६. पैरों की धूल १७. संभावना या अनुमान १८. वास्तव में

जह्ले-ख़िरद ने[1] दिन ये दिखाए
घट गए इन्सां बढ़ गए साए

हाय वो क्योंकर दिल बहलाए
ग़म भी जिसको रास न आए

ज़िद पर इश्क़ अगर आ जाए
पानी छिड़के, आग लगाए

दिल पे कुछ ऐसा वक़्त पड़ा है
भागे, लेकिन राह न पाए

कैसा मजाज़[2] और कैसी हक़ीक़त[3]
अपने ही जल्वे अपने ही साए

कारे - ज़माना[4] जितना - जितना
बनता जाए, बिगड़ता जाए

---

१. बुद्धि की मूढ़ता ने २. अलौकिकता ३. वास्तविकता ४. संसार (को सुन्दर बनाने) का काम

साक़ी की हर निगाह पे बल खा के पी गया
लहरों से खेलता हुआ लहरा के पी गया

बेकैफ़ियत के[1] कैफ़ से[2] घबरा के पी गया
तौबा को तोड़-ताड़ के थर्रा के पी गया

ज़ाहिद[3]! ये मेरी शोख़ी - ए - रिंदाना[4] देखना
रहमत को[5] बातों-बातों में बहला के पी गया

सरमस्ती - ए - अज़ल[6] मुझे जब याद आ गई
दुनिया-ए-एतिबार को[7] ठुकरा के पी गया

आज़ुर्दगी-ए-ख़ातिरे-साक़ी को[8] देखकर
मुझको वो शर्म आई कि शर्मा के पी गया

ऐ रहमते - तमाम[9]! मिरी हर ख़ता मुआफ़
मैं इन्तिहा-ए-शौक़ में[10] घबरा के पी गया

पीता बग़ैर इज़्न[11] ये कब थी मिरी मजाल
दर-पर्दा चश्मे-यार की[12] शह पा के पी गया

उस जाने-मैकदा[13] की क़सम बारहा 'जिगर'
कुल आ़लमे - बसीत[14] पे मैं छा के पी गया

---

१. अमादकताओं के २. आनन्द से ३. विरक्त ४. मद्यपों की चंचलता ५. खुदा को ६. आदिकाल का मतवालापन ७. विश्वास की दुनिया को ८. साक़ी की अप्रसन्नता को ९. सम्पूर्ण कृपा (खुदा) १०. आकांक्षा की चरम सीमा में ११. आज्ञा १२. मित्र (प्रेयसी) की आंख की १३. मधुशाला की जान (साक़ी) १४. अथाह ब्रह्मांड

दिल को सुकून[1] रूह को आराम आ गया
मौत आ गई कि दोस्त का पैग़ाम आ गया

जब कोई ज़िक्रे-गर्दिशे-अय्याम[2] आ गया
बेइख़्तियार लब पे तिरा नाम आ गया

दीवानगी हो, अक़्ल हो, उमीद हो कि यास[3]
अपना वही है वक़्त पे जो काम आ गया

दिल के मुआ़मलात में नासेह[4]! शिकस्त क्या
सौ बार हुस्न पर भी ये इल्ज़ाम आ गया

सैयाद[5] शादमां[6] है मगर ये तो सोच ले
मैं आ गया कि साया तहे-दाम[7] आ गया

दिल को न पूछ मार्काए-हुस्नो-इश्क़ में[8]
क्या जानिए ग़रीब कहां काम आ गया[9]

ये क्या मुक़ामे-इश्क़[10] है ज़ालिम कि इन दिनों
अक्सर तिरे बग़ैर भी आराम आ गया

---

१. शान्ति २. कालचक्र की चर्चा ३. निराशा ४. उपदेशक ५. शिकारी ६. खुश ७ जाल के नीचे अर्थात् जाल में ८. हुस्न और इश्क़ के टकराव या संग्राम में ९. मारा गया १०. प्रणय-स्थिति

तुझी से इब्तिदा[1] है, तू ही इक दिन इंतिहा[2] होगा
सदा-ए-साज़[3] होगी और न साज़े-बेसदा[4] होगा

हमें मालूम है, हम से सुनो, महशर में[5] क्या होगा
सब उसको देखते होंगे, वो हमको देखता होगा

जहन्नुम हो कि जन्नत जो भी होगा फ़ैसला होगा
ये क्या कम है हमारा और उनका सामना होगा

निगाहे-क़ह्र[6] पर भी जानो-दिल सब खोए बैठा है
निगाहे-मेह्र[7] आशिक़ पर अगर होगी तो क्या होगा

ये माना भेज देगा हमको महशर से जहन्नुम में
मगर जो दिल पे गुज़रेगी वो दिल ही जानता होगा

समझता क्या है तू दीवानगाने-इश्क़[8] को ज़ाहिद[9]
ये हो जाएंगे जिस जानिब[10] उसी जानिब ख़ुदा होगा

---

१. प्रारम्भ २. अन्त ३. साज़ की ध्वनि ४. ध्वनिरहित साज़ ५. प्रलय-क्षेत्र में ६. प्रकोप की दृष्टि ७. कृपा-दृष्टि ८. पागल प्रेमियों को ९. विरक्त १०. ओर

न ताबे-मस्ती[1] न होशे-हस्ती[2] कि शुक्रे-ने'मत[3] अदा करेंगे
खिज़ां में जब है ये अपना आलम[4], बहार आई तो क्या करेंगे

हर एक ग़म को फ़रोग़[5] देकर यहां तक आरास्ता[6] करेंगे
वही जो रहते हैं दूर हम से, खुद अपनी आग़ोश वा करेंगे[7]

जिधर से गुज़रेंगे सरफ़रोशाना-कारनामे[8] सुना करेंगे
वो अपने दिल को हज़ार रोकें, मिरी मोहब्बत को क्या करेंगे

न शुक्रे-ग़म ज़ेरे-लब[9] करेंगे, न शिक्वा-ए-बरमला[10] करेंगे
जो हम पे गुज़रेगी दिल ही दिल में कहा करेंगे सुना करेंगे

ये ज़ाहिरी[11] जल्वा-हाय-रंगीं[12] फ़रेब कब तक दिया करेंगे
नज़र को जो कर सके न तस्कीं[13] वो दिल की तस्कीन क्या करेंगे

वहां भी आहें भरा करेंगे, वहां भी नाले[14] किया करेंगे
जिन्हें है तुझसे ही सिर्फ़ निस्बत[15], वो तेरी जन्नत को क्या करेंगे

नहीं है जिन को मजाले-हस्ती[16], सिवाए इसके वो क्या करेंगे
कि जिस ज़मीं के हैं बसने वाले उसे भी रुसवा किया करेंगे

---

१. उन्माद की सामर्थ्य २. जीवन या अस्तित्व का होश ३. ईश्वरीय वरदानों के लिए धन्यवाद ४. अवस्था ५. चमक, ख्याति ६. सुसज्जित ७. बांहों में लेने के लिए बांहें फैलाएंगे ८. सर की बाज़ी लगाकर किए हुए उल्लेखनीय कार्य ९. होंठों ही होंठों में ग़म या दुख प्रदान करने का धन्यवाद १०. मुंह पर शिकायत ११. दिखावे के १२. रंगीन जल्वे १३. तुष्टि १४. आर्तनाद १५. सम्बन्ध १६. जीवन को सहने की सामर्थ्य

हम अपनी क्यों तर्ज़े-फ़िक्र[1] छोड़ें, हम अपनी क्यों वज़अ-ख़ास[2] बदलें
कि इन्क़िलाबाते-नौ-ब-नौ[3] तो हुआ किए हैं हुआ करेंगे

ये सख़्ततर इश्क़ के मराहिल[4], ये हर क़दम पर हज़ार एहसां
जो बच रहे तो जुनूं के हक़ में[5] जिएंगे जब तक दुआ करेंगे

ये ख़ामकाराने-इश्क़[6] सोचें, ये शिक्वा-संजाने-हुस्न[7] समझें
कि ज़िन्दगी ख़ुद हसीं न होगी तो फिर तवज्जुह वो क्या करेंगे

ख़ुद अपने ही सोज़े-बातिनी से[8] निकाल इक शम्ए-ग़ैरफ़ानी[9]
चिराग़े-दैरो-हरम[10] तो ऐ दिल, जला करेंगे बुझा करेंगे

---

१. चिंतन का ढंग २. विशिष्ट तौर-तरीके ३. नई से नई क्रांतियां ४. मंज़िलें ५. उन्माद के पक्ष में ६. कच्चे प्रेमी ७. सौन्दर्य या प्रेयसी की शिकायत करने वाले ८. भीतरी तपन से ९. अमर दीपक १०. मस्जिद और मन्दिर के दीपक

अल्लाह अगर तौफ़ीक़ न दे इन्सान के बस का काम नहीं
फ़ैज़ाने-मोहब्बत[1] आम सही, इर्फ़ाने-मोहब्बत[2] आम नहीं

ये तूने कहा क्या ऐ नादां, फ़ैयाज़ी-ए-क़ुदरत[3] आम नहीं
तू फ़िक्रो-नज़र[4] तो पैदा कर, क्या चीज़ है जो इन्आम नहीं

यारब ये मुक़ामे-इश्क़ है क्या? गो दीदा-ओ-दिल[5] नाकाम नहीं
तस्कीन है और तस्कीन नहीं, आराम है और आराम नहीं

आना है जो बज़्मे-जानां में[6], पिन्दारे-ख़ुदी को[7] तोड़ के आ
ऐ होशो-ख़िरद के[8] दीवाने, यां[9] होशो-ख़िरद का काम नहीं

इश्क़ और गवारा ख़ुद कर ले बेशर्त शिकस्ते-फ़ाश[10] अपनी
दिल की भी कुछ उनके साज़िश है, तन्हा ये नज़र का काम नहीं

सब जिसको असीरी[11] कहते हैं, वो तो है असीरी ही लेकिन
वो कौन सी आज़ादी है जहां, जो आप ख़ुद अपना दाम[12] नहीं

---

१. प्रेम की उदारता २. प्रेम की पहचान ३. प्रकृति की उदारता ४. चिंतन और परख ५. दृष्टि और दिल ६. प्रेयसी की महफ़िल में ७. अहंकार को ८. बुद्धि के ९. यहां १०. पराजय ११. क़ैद १२. जाल

मोहब्बत में क्या-क्या मुक़ाम आ रहे हैं
कि मंज़िल पे हैं और चले जा रहे हैं

ये कह-कह के हम दिल को बहला रहे हैं
वो अब चल चुके हैं, वो अब आ रहे हैं

वो अज़-खुद ही[1] नादिम हुए जा रहे हैं
ख़ुदा जाने क्या-क्या ख़याल आ रहे हैं

हमारे ही दिल से मज़े उनके पूछो
वो धोके जो दानिस्ता[2] हम खा रहे हैं

जफ़ा करने वालों को क्या हो गया है
वफ़ा करके भी हम तो शर्मा रहे हैं

वो आलम है अब यार-ओ-अग़ियार[3] कैसे
हमीं अपने दुश्मन हुए जा रहे हैं

मिज़ाजे-गिरामी की[4] हो ख़ैर या रब
कई दिन से अक्सर वो याद आ रहे हैं

---

१. स्वयं ही २. जान-बूझकर ३. मित्र और शत्रु ४. उ
स्वास्थ्य की

यादे-जानां[1] भी अजब रूह-फ़ज़ा[2] आती है
सांस लेता हूं तो जन्नत की हवा आती है

मर्गे-नाकामे-मोहब्बत[3] मिरी तक़सीर[4] मुआ़फ़
ज़ीस्त[5] बन-बन के मिरे हक़ में क़ज़ा[6] आती है

नहीं मालूम वो खुद हैं कि मोहब्बत उनकी
पास ही से कोई बेताब सदा[7] आती है

मैं तो इस सादगी-ए-हुस्न पे[8] उसके सदक़े
न जफ़ा आती है जिसको न वफ़ा आती है

हाए क्या चीज़ है ये तक्मिला-ए-हुस्नो-शबाब[9]
अपनी सूरत से भी अब उनको हया[10] आती है

---

१. प्रेयसी की याद २. प्राणवर्द्धक ३. असफल प्रेम की मृत्यु ४. ग़लती ५. जीवन ६. मृत्यु ७. व्याकुल आवाज़ ८. सौन्दर्य की सादगी पर ९. सुन्दरता और यौवन की पूर्ति १०. लज्जा

ये सहनो-रविश[1], ये लाला-ओ-गुल[2] होने दो जो वीरां होते हैं
तख़रीबो-जुनूं के[3] पर्दे में ता'मीर के[4] सामां होते हैं

मंडलाए हुए जब हर जानिब तूफ़ां ही तूफ़ां होते हैं
दीवाने कुछ आगे बढ़ते हैं और दस्तो-गिरेबां होते हैं[5]

इस जह्दो-तलब की[6] दुनिया में क्या कारे-नुमायां[7] होते हैं
हम सिर्फ़ शिकायत करते हैं वो सिर्फ़ पशेमां[8] होते हैं

तू ख़ुश है कि तुझ को हासिल हैं मैं ख़ुश कि मेरे हिस्से में नहीं
वो काम जो आसां होते हैं, वो जल्वे जो अर्ज़ां[9] होते हैं

आसूदा-ए-साहिल[10] तो है मगर शायद ये तुझे मालूम नहीं
साहिल से भी मौजें[11] उठती हैं, ख़ामोश भी तूफ़ां होते हैं

जो हक़ की ख़ातिर जीते हैं मरने से कहीं डरते हैं 'जिगर'?
जब वक़्ते-शहादत[12] आता है, दिल सीनों में रक़्सां[13] होते हैं

---

१. बाग़ और क्यारियों के बीच के छोटे मार्ग २. फूल ३. विनाश और उन्माद के ४. निर्माण के ५. हाथापाई करते हैं ६. संघर्ष और अभिलाषा की ७. उल्लेखनीय कार्य ८. लज्जित ९. सस्ते अर्थात् आसानी से मिल जाने वाले १०. तट पर निश्चित और सन्तुष्ट ११. लहरें १२. वीरगति का समय १३. नृत्यशील

आंखों का था क़ुसूर न दिल का क़ुसूर था
आया जो मेरे सामने मेरा ग़ुरूर था

वो थे न मुझसे दूर न मैं उनसे दूर था
आता न था नज़र तो नज़र का क़ुसूर था

कोई तो दर्दमंदे-दिले-नासुबूर[1] था
माना कि तुम न थे, कोई तुम-सा ज़रूर था

लगते ही ठेस टूट गया साज़े-आरज़ू[2]
मिलते ही आंख शीशा-ए-दिल[3] चूर-चूर था

ऐसा कहां बहार में रंगीनियों का जोश
शामिल किसी का ख़ूने-तमन्ना[4] ज़रूर था

साक़ी की चश्मे-मस्त का क्या कीजिए बयान
इतना सरूर था कि मुझे भी सरूर था

जिस दिल को तुमने लुत्फ़ से[5] अपना बना लिया
उस दिल में इक छुपा हुआ नश्तर ज़रूर था

देखा था कल 'जिगर' को सरे-राहे-मैकदा[6]
इस दर्जा पी गया था कि नश्शे में चूर था

---

१. अधीर हृदय का हितैषी २. अभिलाषा-रूपी साज़ ३. दिल-रूपी शीशा ४. आकांक्षा का ख़ून ५. प्रेमपूर्वक ६. मधुशाला के रास्ते में

फ़िक्रे-मंज़िल[१] है न होशे - जादा - ए - मंज़िल[२] मुझे
जा रहा हूं जिस तरफ़ ले जा रहा है दिल मुझे

अब ज़बां[३] भी दे अदा-ए-शुक्र के[४] क़ाबिल मुझे
दर्द बख़्शा है[५] अगर तूने बजाए दिल मुझे

यूं तड़प कर दिल ने तड़पाया सरे-महफ़िल[६] मुझे
उनको क़ातिल कहने वाले कह उठे क़ातिल मुझे

जा भी ऐ नासेह[७]! कहां का सूद[८] और कैसा ज़ियां[९]
इश्क़ ने समझा दिया है इश्क़ का हासिल[१०] मुझे

फूंक दे ऐ ग़ैरते - सोज़े - मोहब्बत[११] फूंक दे
अब समझती हैं वो नज़रें रहम के क़ाबिल मुझे

ऐ हुजूमे-ना-उमीदी[१२] ! शादबाशो - ज़िन्दा - बाश[१३]
तूने सब से कर दिया बेगाना - ओ - ग़ाफ़िल मुझे

दर्दे- महरूमी[१४] सही, एहसासे - नाकामी[१५] सही
उसने समझा तो ब-हर-सूरत किसी क़ाबिल मुझे

यह भी क्या मन्ज़र है, बढ़ते हैं न हटते हैं क़दम
तक रहा हूं दूर से मंज़िल को मैं, मंज़िल मुझे

---

१. मंज़िल (पर पहुंचने) की चिन्ता २. मंज़िल तक पहुंचने वाले मार्ग का होश ३. वाक्-शक्ति ४. धन्यवाद कह सकने के ५. प्रदान किया है ६. महफ़िल में ७. धर्मोपदेशक ८. लाभ ९. हानि १०. तथ्य या प्राप्ति ११. प्रेम की गर्मी के आत्मसम्मान १२. निराशाओं के समूह १३. प्रसन्न और जीवित रहे १४. वंचना की पीड़ा १५. असफलता की अनुभूति

दिल गया रौनक़े - हयात[1] गई
ग़म गया सारी कायनात[2] गई

दिल धड़कते ही फिर गई वो नज़र
लब तक आई न थी कि बात गई

दिन का क्या ज़िक्र तीरह-बख़्तों में[3]
एक रात आई, एक रात गई

तेरी बातों से आज तो वाइज़[4]
वो जो थी ख़्वाहिशे - निजात[5], गई

तर्के-उल्फ़त[6] बहुत बजा नासेह[7]
लेकिन उस तक अगर ये बात गई

क़ैदे-हस्ती[8] से कब निजात 'जिगर'
मौत आई अगर हयात गई

---

१. जीवन की रौनक़ २. विश्व ३. काले भाग्यवालों अर्थात् अभागों में ४. धर्मोपदेशक ५. मुक्ति की इच्छा ६. प्रेम को त्यागना ७. धर्मोपदेशक ८. जीवन रूपी क़ैद से

न जां दिल बनेगो, न दिल जान होगा
ग़मे-इश्क़ ख़ुद अपना उन्वान[1] होगा

ठहर, ऐ दिले - दर्दमंदे - मोहब्बत[2]
तसव्वुर[3] किसी का परेशान होगा

मिरे दिल में भी, इक वो सूरत है पिन्हां[4]
जो तू देख लेगा तो हैरान होगा

ये कह कर दिया उसने दर्दे-मोहब्बत
जहां हम रहेंगे ये सामान होगा

गवारा नहीं जान देकर भी दिल को
तिरी इक नज़र का जो नुक़सान होगा

चलो देख आएं 'जिगर' का तमाशा
सुना है वो काफ़िर मुसलमान होगा

---

१. शीर्षक २. प्रेम के प्रति हितैषी दिल ३. कल्पना ४. छुपी हुई

and Brilliant Ghazal

इक लफ़्ज़े - मोहब्बत[1] का अदना[2] ये फ़साना है
सिमटे तो दिले-आशिक़[3], फैले तो ज़माना है

हम इश्क़ के मारों का इतना ही फ़साना है
रोने को नहीं कोई हंसने को ज़माना है

वो और वफ़ा-दुश्मन, मानेंगे न माना है
सब दिल की शरारत है आंखों का बहाना है

क्या हुस्न ने समझा है, क्या इश्क़ ने जाना है
हम ख़ाक-नशीनों की[4] ठोकर में ज़माना है

ऐ इश्क़े - जुनूं - पेशा[5] ! हां इश्क़े - जुनूं - पेशा
आज एक सितमगर को[6] हंस-हंस के रुलाना है

ये इश्क़ नहीं आसां, इतना ही समझ लीजे
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है

आंसू तो बहुत से हैं आंखों में 'जिगर' लेकिन
बिंध जाए सो मोती है रह जाए सो दाना है

---

१. प्रेम के शब्द २. तुच्छ ३. प्रेमी का दिल ४. मिट्टी या धरती पर रहने वालों की ५. उन्मादी प्रेम ६. अत्याचारी (प्रेयसी) को

सुनता हूं कि हर हाल में वो दिल के क़रीं[1] है
जिस हाल में हो, अब मुझे अफ़सोस नहीं है

ज़ाहिद[2] मगर इस रम्ज़ से[3] आगाह[4] नहीं है
सिजदा वही सिजदा है कि जो नंगे-जबीं[5] है

जिस रंग में देखो उसे वो पर्दानशीं है
और इस पे ये पर्दा है कि पर्दा ही नहीं है

हर एक मकां में कोई इस तरह मकीं है[6]
पूछो तो कहीं भी नहीं, देखो तो यहीं है

मुझ से कोई पूछे तेरे मिलने की अदाएं
दुनिया तो ये कहती है कि मुमकिन ही नहीं है

मैं और तिरे हिज्रे-जफ़ाकार के[7] सदक़े
इस बात पे जीता हूं कि मरने का यक़ीं है

इस बज़्मे-हक़ीक़त की[8] हक़ीक़त मैं कहूं क्या
नग़मों का तलातुम[9] तो है, आवाज़ नहीं है

किस-किस से तिरे इश्क़ में दामन को छुड़ाऊं
कौनैन[10] है, और एक मेरी जाने-हज़ीं[11] है

---

१. निकट २. विरक्त ३. भेद से ४. परिचित ५. माथे का कलंक ६. आबाद है ७. दुखदायक बिछोह के ८. संसार की ९ तूफ़ान १०. उभय लोक ११. दुखित आत्मा

ऐ हुस्ने-यार ! शर्म, ये क्या इन्क़िलाब है
तुझ से ज़ियादा दर्द तिरा कामयाब है

आशिक़ की बेदिली का तग़ाफ़ुल[1] नहीं जवाब
उसका बस एक जोशे-मोहब्बत जवाब है

मैं इश्क़े-बेनियाज़[2] हूं, तुम हुस्ने-बेपनाह
मेरा जवाब है, न तुम्हारा जवाब है

मैख़ाना है उसी का, ये दुनिया उसी की है
जिस तश्ना-लब के[3] हाथ में जामे-शराब है

ऐ मोहतसिब[4]! न फैंक, मिरे मोहतसिब ! न फैंक
ज़ालिम ! शराब है, अरे ज़ालिम ! शराब है

अपने हुदूद से[5] न बढ़े कोई इश्क़ में
जो ज़र्रा जिस जगह है, वहीं आफ़ताब[6] है

मेरी निगाहे-शौक़[7] भी कुछ कम नहीं मगर
फिर भी तिरा शबाब[8], तिरा ही शबाब है

सर्माया-ए-फ़िराक़[9] 'जिगर' आह कुछ न पूछ
इक जान है, सो अपने लिए ख़ुद अज़ाब[10] है

---

१. उपेक्षा २. निःस्पृह इश्क़ ३. प्यासे के ४. रसाध्यक्ष ५. सीमाओं से ६. सूर्य ७. इश्क़ की नज़र ८. यौवन ९. जुदाई की सम्पत्ति १०. मुसीबत

इश्क़ की हद से निकलते, फिर ये मन्ज़र देखते
काश हुस्ने-यार को, हम हुस्न बनकर देखते

ग़ुन्चा-ओ-गुल[1] देखते या माहो-अख्तर[2] देखते
तुम नज़र आते हमें, हम कोई मन्ज़र देखते

फ़ितरते-मजबूरी पे[3] क़ाबू ही कुछ चलता नहीं
वर्ना हम तो तुझसे भी तुझको छुपाकर देखते

फिर वही हसरत है साक़ी फिर उसी अन्दाज़ से
फिर सिवा साग़र के सब कुछ ग़र्क़े-साग़र[4] देखते

मेरे चुप रहने पे क्या वो बाज़ आते छेड़ से
मुस्करा कर देखते, फिर मुस्करा कर देखते

तिश्नगाने-दीदे-जल्वा[5] हैं, हमें समझा है क्या
तुम अगर सूरत दिखाते जान देकर देखते

मर मिटा इक बात पर किस आन से किस शान से
आप अगर ऐसे में होते दिल के तेवर देखते

---

१. कलियां और फूल २. चांद-सितारे ३. विवशता की प्रकृ[ति]
पर ४. शराब के प्याले में डूबा हुआ ५. दर्शनों के प्यासे

उसे हालो-क़ाल से[1] वास्ता, न ग़रज़ मुक़ामो-क़ियाम से[2]
जिसे कोई निस्बते-खास[3] हो, तिरे हुस्ने-वर्क़[4]-खिराम से

मुझे दे रहे हैं तसल्लियां, वो हर एक ताज़ा पयाम से
कभी आके मन्ज़रे-आ़म पर, कभी हट के मन्ज़रे-आ़म से

न ग़रज़ किसी से न वास्ता, मुझे काम अपने ही काम से
तिरे ज़िक्र से, तिरी फ़िक्र से, तिरी याद से, तिरे नाम से

तिरी सुबहे-ऐश[5] है क्या बला? तुझे ऐ फ़लक[6] जो हो हौसला
कभी कर ले आके मुक़ाबला, ग़मे-हिज्रे-यार[7] की शाम से

जो उठा है दर्द उठा करे कोई खाक़ उससे गिला[8] करे
जिसे ज़िद हो हुस्न के ज़िक्र से, जिसे चिढ़ हो इश्क़ के नाम से

वहीं चश्मे-हूर[9] फड़क गई, अभी पी न थी कि बहक गई
कभी यक-ब-यक जो छलक गई किसी रिंदे-मस्त के जाम से[10]

तू हज़ार उज़्र[11] करे मगर, हमें शक है और ही कुछ 'जिगर'
तिरे इज़्तराबे-निगाह से[12], तिरी एहतियाते-कलाम से[13]

---

१. स्थिति और सम्पत्ति से २. स्थान और निवास से ३. विशेष सम्बन्ध ४. बिजली ऐसी चाल की सुन्दरता से ५. विलास की सुबह ६. आकाश ७. प्रेयसी के बिछोह के ग़म ८. शिकायत ९. हूर की आंख १०. मस्त मद्यप के प्याले से ११. बहाने १२. नज़र की बेचैनी से १३. वार्तालाप में सावधानी बरतने से

शायरे-फ़ितरत[1] हूं मैं, जब फ़िक्र[2] फ़र्माता हूं मैं
रूह बन कर ज़र्रे-ज़र्रे में समा जाता हूं मैं

आ कि तुझ बिन इस तरह ऐ दोस्त घबराता हूं मैं
जैसे हर शै में किसी शै की कमी पाता हूं मैं

जिस क़दर अफ़साना-ए-हस्ती को[3] दोहराता हूं मैं
और भी बेगाना-ए-हस्ती[4] हुआ जाता हूं मैं

जब मकानो-लामकां[5] सब से गुज़र जाता हूं मैं
अल्लाह-अल्लाह तुझको ख़ुद अपनी जगह पाता हूं मैं

हाय री मजबूरियां, तर्के-मोहब्बत[6] के लिए
मुझको समझाते हैं वो और उनको समझाता हूं मैं

मेरी हिम्मत देखना, मेरी तबीयत देखना
जो सुलझ जाती है गुत्थी फिर से उलझाता हूं मैं

हुस्न को क्या दुश्मनी है, इश्क़ को क्या बैर है
अपने ही क़दमों की ख़ुद ही ठोकरें खाता हूं मैं

तेरी महफ़िल तेरे जल्वे फिर तक़ाज़ा क्या ज़रूर
ले उठा जाता हूं ज़ालिम, ले चला जाता हूं मैं

---

१. प्रकृति का शायर २. चिन्तन ३. जीवन की कथा को
४. जीवन से असम्बन्धित ५. स्थान, अस्थान ६. प्रेम के त्याग

वाह रे शौक़े-शहादत[1] कू-ए-क़ातिल की[2] तरफ़
गुनगुनाता, रक़्स[3] करता, झूमता जाता हूं मैं

देखना उस इश्क़ की ये तुफ़ाकारी[4] देखना
वो जफ़ा करते हैं मुझ पर और शर्माता हूं मैं

एक दिल है और तूफ़ाने-हवादिस[5] ऐ 'जिगर'
एक शीशा है कि हर पत्थर से टकराता हूं मैं

○
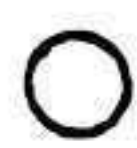
ये हुजूमे-ग़म[6], ये अन्दोहो-मुसीबत[7] देखकर
अपनी हालत देखता हूं, उसकी सूरत देखकर

कपकपी सारे बदन में, ज़र्द चेहरा, दिल उदास
चुप खड़े हैं दूर, मेरी ख़ाके-तुर्बत[8] देखकर

चारासाज़ों से[9] मरीज़े-ग़म को फ़ुर्सत मिल गई
हो चुके मायूस आसारे-तबीयत[10] देखकर

---

१. वीर-गति के शौक़ २. क़ातिल (प्रेयसी) की गली की ३. नृत्य ४. विलक्षणता ५. दुर्घटनाओं का तूफ़ान ६. ग़मों का समूह ७. दुःख और व्यथा ८. क़ब्र की मिट्टी ९. उपचारकों से १०. स्वास्थ्य के लक्षण

जो न का'बे में है महदूद[1] न बुतख़ाने में[2]
हाए वो और इक उजड़े हुए काशाने में[3]

मिलती है उम्रे-अबद[4] इश्क़ के मैख़ाने में
ऐ अजल[5] तू भी समा जा मेरे पैमाने में[6]

हरमो-दैर में[7] रिन्दों का[8] ठिकाना ही न था
वो तो ये कहिए अमां[9] मिल गई मैख़ाने में

आज तो कर दिया साक़ी ने मुझे मस्त-अलस्त
डाल कर ख़ास निगाहें मिरे पैमाने में

आप देखें तो सही रब्ते-मोहब्बत[10] क्या है
अपना अफ़साना मिलाकर मिरे अफ़साने में

हज्वे-मय[11] ने तिरा ऐ शैख़ भरम खोल दिया
तू तो मस्जिद में है नीयत तेरी मैख़ाने में

मश्वुरे होते हैं जो शैख़ो-बिरहमन में 'जिगर'
रिंद सुन लेते हैं बैठे हुए मैख़ाने में

---

१. सीमित २. मंदिर में ३. घर में ४. अनंत काल की आ...
५. मृत्यु ६. शराब के प्याले में ७. मन्दिर और मस्जिद में ८. मद्यप...
का ९. पनाह १०. प्रेम का सम्बन्ध ११. शराब की निंदा

काम आख़िर जज़्बा-ए-बेइख़्तियार[1] आ ही गया
दिल कुछ इस सूरत से तड़पा उनको प्यार आ ही गया

जब निगाहें उठ गईं अल्लाह री मे'राजे-शौक़[2]
देखता क्या हूं वो जाने-इन्तिज़ार[3] आ ही गया

हाए ये हुस्ने-तसव्वुर[4] का फ़रेबे-रंगो-बू[5]
मैंने समझा जैसे वो जाने-बहार[6] आ ही गया

हां सज़ा दे ऐ ख़ुदा-ए-इश्क़[7] ऐ तौफ़ीक़े-ग़म[8]
फिर ज़बाने-बेअदब पर[9] ज़िक्रे-यार आ ही गया

इस तरह ख़ुश हूं किसी के वादा-ए-फ़र्दा पे[10] मैं
दरहक़ीक़त जैसे मुझको एतिबार आ ही गया

हाए काफ़िर दिल की ये काफ़िर जुनूं-अंगेज़ियां[11]
तुमको प्यार आए न आए मुझको प्यार आ ही गया

जान ही दे दी 'जिगर' ने आज पाए-यार पर[12]
उम्र भर की बेक़रारी को क़रार आ ही गया

---

१. विवशता की भावना २. इश्क़ की चरम सीमा ३. इन्तिज़ार की जान (प्रेयसी) ४. कल्पना की सुन्दरता ५. सुगन्धि तथा रंग का धोखा ६. बहार की जान (प्रेयसी) ७. प्रेम के देवता ८. ग़म सहने की सामर्थ्य ९. अविनयी ज़बान पर १०. आने वाले कल के वायदे पर ११. उन्मादपूर्ण हरकतें १२. यार (प्रेयसी) के पांवों पर

दिल ने सीने में तड़प कर उन्हें जब याद किया
दरो-दीवार को[1] आमादा-ए-फ़रियाद[2] किया

वस्ल से[3] शाद[4] किया हिज्र से[5] नाशाद[6] किया
उसने जिस तरह से चाहा मुझे बर्बाद किया

हम को देख ओ ग़मे-फ़ुर्क़त के न सुनने वाले
इस बुरे हाल में भी हमने तुझे याद किया

और क्या चाहिए सर्माया-ए-तस्कीं[7] ऐ दोस्त
इक नज़र दिल की तरफ़ देख लिया, शाद किया

शरहे-नैरंगी-ए-असबाब[8] कहां तक कीजे
मुख़्तसर ये कि हमें आपने बर्बाद किया

मौत इक दामे-गिरफ़्तारी-ए-ताज़ा[9] है 'जिगर'
ये न समझो कि ग़मे-इश्क़ ने आज़ाद किया

---

१. दरवाज़े और दीवारों को २. फ़रियाद पर तत्पर ३. मिलन से ४. प्रसन्न ५. जुदाई से ६. अप्रसन्न ७. संतोष की पूंजी ८. विविध कारणों की व्याख्या ९. नई गिरफ़्तारी का जाल

कोई ये कह दे गुलशन-गुलशन[1]
लाख बलाएं, एक निशेमन[2]

कामिल रहबर[3], क़ातिल रहज़न[4]
दिल-सा दोस्त न दिल-सा दुश्मन

फूल खिले हैं गुलशन-गुलशन
लेकिन अपना - अपना दामन

उम्रें बीतीं, सदियां गुज़रीं
है वही अब तक अक़्ल का बचपन

इश्क़ है प्यारे, खेल नहीं है
इश्क़ है कारे - शीशा - ओ - आहन[5]

आज न जाने राज़ ये क्या है
हिज्र की रात और इतनी रौशन

आ, कि न जाने तुझ बिन कल से
रूह है लाशा[6], जिस्म है मदफ़न[7]

कांटों का भी हक़ है कुछ आख़िर
कौन छुड़ाए अपना दामन

---

१. वाटिका-वाटिका २. घोंसला ३. पथ-प्रदर्शक ४. डाकू ५. लोहे और शीशे का काम (टकराव) ६. शव ७. क़ब्र

पांव उठ सकते नहीं मंज़िले-जानां के[1] ख़िलाफ़
और अगर होश की पूछो तो मुझे होश नहीं

हुस्न से इश्क़ जुदा है न जुदा इश्क़ से हुस्न
कौन-सी शै है? जो आग़ोश-दर-आग़ोश[2] नहीं

मिट चुके ज़िह्न से[3] सब यादे-गुज़श्ता के[4] नुक़ूश[5]
फिर भी इक चीज़ है ऐसी कि फ़रामोश[6] नहीं

कभी उन मदभरी आंखों से पिया था इक जाम
आज तक होश नहीं, होश नहीं, होश नहीं

इश्क़ गर हुस्न के जल्वों का है मरहूने-करम[7]
हुस्न भी इश्क़ के एहसां से सुबक़दोश[8] नहीं

---

१. प्रेयसी की मंज़िल के २. गोद अन्दर गोद ३. मस्तिष्क से ४. पुरानी यादों के ५. चित्र ६. भूली ७. आभारी ८. भार-मुक्त

मरके भी कब तक निगाहे-शौक़ को रुसवा करें
ज़िन्दगी तुझको कहां फैंक आएं, आख़िर क्या करें

ज़ख्मे-दिल मुमकिन नहीं तो चश्मे-दिल ही वा करें[1]
वो हमें देखें न देखें हम उन्हें देखा करें

ऐ मैं क़ुर्बां मिल गया अर्ज़े-मोहब्बत का सिला[2]
हां उसी अंदाज़ से कह दो, तो फिर हम क्या करें

देखिए क्या शोर उठता है हरीमे-नाज़ से[3]
सामने आईना रख कर खुद को इक सिज्दा करें

हाए ये मजबूरियां, महरूमियां, नाकामियां
इश्क़ आख़िर इश्क़ है, तुम क्या करो, हम क्या करें

---

१. मन के नेत्र ही खोलें २. पुरस्कार ३. प्रेयसी के घर की चारदीवारी से

वो काफ़िर आशना, नाआशना[1] यूं भी है और यूं भी
हमारी इब्तिदा-ता-इन्तिहा[2] यूं भी है और यूं भी

तअज्जुब क्या अगर रस्मे-वफ़ा यूं भी है और यूं भी
कि हुस्नो-इश्क़ का हर मसलआ[3] यूं भी है और यूं भी

कहीं ज़र्रा कहीं सहरा कहीं क़तरा कहीं दरिया
मोहब्बत और उसका सिलसिला यूं भी है और यूं भी

वो मुझसे पूछते हैं, एक मक़सद[4] मेरी हस्ती का
बताऊं क्या कि मेरा मुद्दआ[5] यूं भी है और यूं भी

हम उनसे क्या कहें ? वो जानें उनकी मसलहत जाने
हमारा हाले-दिल तो बरमला[6] यूं भी है और यूं भी

न पा लेना तिरा आसां न खो देना तिरा मुश्किल
मुसीबत में ये जाने-मुब्तला[7] यूं भी है और यूं भी

---

१. परिचित, अपरिचित २. प्रारंभ से अंत ३. समस्या
४. उद्देश्य ५. मनोरथ ६. प्रत्यक्ष ७. प्रेमग्रस्त

सोज़ में भी वही इक नग़मा है जो साज़ में है
फ़र्क़ नज़दीक की और दूर की आवाज़ में है

ये सबब है कि तड़प सीना-ए-हर-साज़ में[1] है
मेरी आवाज़ भी शामिल तेरी आवाज़ में है

जो न सूरत में न मा'नी में[2] न आवाज़ में है
दिल की हस्ती भी उसी सिलसिला-ए-राज़ में[3] है

आशिक़ों के दिले-मजरूह से[4] कोई पूछे
वो जो इक लुत्फ़ निगाहे-ग़लत-अंदाज़[5] में है

गोशे-मुश्ताक़[6] की क्या बात है अल्लाह-अल्लाह
सुन रहा हूं मैं वो नग़मा जो अभी साज़ में है

---

१. प्रत्येक साज़ की छाती में २. अर्थों में ३. भेदों की शृंखला
४. घायल हृदय से ५. उचटती हुई नज़र ६. उत्कंठित कान

कुछ इस अदा से आज वो पहलूनशीं[1] रहे
जब तक हमारे पास रहे हम नहीं रहे

ईमानो-कुफ्र[2] और न दुनिया-ओ-दीं[3] रहे
ऐ इश्क़ ! शादबाश[4] कि तन्हा हमीं रहे

यारब किसी के राज़े-मोहब्बत की[5] ख़ैर हो
दस्ते-जुनूं[6] रहे न रहे, आस्तीं[7] रहे

जा और कोई ज़ब्त[8] की दुनिया तलाश कर
ऐ इश्क़ ! हम तो अब तिरे क़ाबिल नहीं रहे

मुझको नहीं क़ुबूल दो आलम की[9] वुसअतें[10]
क़िस्मत में कू-ए-यार की[11] दो गज़ ज़मीं रहे

दर्दे - ग़मे - फ़िराक़ के[12] ये सख़्त मरहले[13]
हैरां[14] हूं मैं कि फिर भी तुम इतने हसीं रहे

इस इश्क़ की तलाफ़ी - ए - माफ़ात[15] देखना
रोने की हसरतें हैं जब आंसू नहीं रहे

---

१. पहलू में बैठे २. धर्म-अधर्म ३. दुनिया और धर्म ४. प्रसन्न रह ५. प्रेम के भेद की ६. उन्माद का हाथ ७. आस्तीन ८. सहन ९. दोनों लोकों की १०. विशालताएं ११. प्रेयसी की गली की १२. जुदाई के ग़म की पीड़ा के १३. समस्याएं १४. हैरान १५. समय निकल जाने के बाद की क्षतिपूर्ति

मुमकिन नहीं कि जज़्बा-ए-दिल[1] कारगर[2] न हो
ये और बात है तुम्हें अब तक खबर न हो

तौहीने-इश्क़, देख, न हो ऐ 'जिगर', न हो
हो जाए दिल का ख़ून मगर आंख तर न हो

लाज़िम ख़ुदी का[3] होश भी है बेख़ुदी के[4] साथ
किसकी उसे खबर जिसे अपनी ख़बर न हो

एहसाने - इश्क़ अस्ल में तौहीने - हुस्न है
हाज़िर हैं दीनो-दिल[5] भी ज़रूरत अगर न हो

या तालिबे-दुआ[6] था मैं इक-एक से 'जिगर'
या ख़ुद ये चाहता हूं दुआ में असर न हो

---

१. मनोभावना २. सफल ३. अहंभाव या आत्म-सम्मान का ४. आत्म-विसर्जन के ५. धर्म और दिल ६. दुआ करने का इच्छुक

मोहब्बत की मोहब्बत तक ही जो दुनिया समझते हैं
ख़ुदा जाने वो क्या समझे हुए हैं क्या समझते हैं

जमाले-रंगो-बू[1] तक हुस्न की दुनिया समझते हैं
जो सिर्फ़ इतना समझते हैं वो आख़िर क्या समझते हैं

कमाले-तश्नगी ही से[2] बुझा लेते हैं प्यास अपनी
इसी तपते हुए सहरा[3] को हम दरिया समझते हैं

हम, उनका इश्क़ कैसा, उनके ग़म के भी नहीं क़ाबिल
ये उनकी मेह्रबानी है कि वो ऐसा समझते हैं

मोहब्बत में नहीं सैरे - मनाज़िर की[4] हमें परवाह
हम अपने हर नफ़स को[5] इक नई दुनिया समझते हैं

ख़बर इसकी नहीं उन ख़ामकाराने-मोहब्बत को[6]
उसी को दुःख भी देते हैं जिसे अपना समझते हैं

---

१. रंग तथा सुगन्धि की सुन्दरता २. प्यास की अधिकता ही से ३. मरुस्थल ४. दृश्य देखने की ५. श्वास को ६. प्रेम में अपरिपक्व व्यक्तियों को

अब उनका क्या भरोसा वो आएं या न आएं
आ ऐ ग़मे-मोहब्बत तुझ को गले लगाएं

उश्शाक़[1] पा रहे हैं हर जुर्म पर सज़ाएं
इनआम बट रहे हैं मग़रूर[2] हैं ख़ताएं

उससे भी शोख़तर[3] हैं उस शोख़ की अदाएं
कर जाएं काम अपना लेकिन नज़र न आएं

जैसा वो चाहते हैं, जो कुछ वो चाहते हैं
आती हैं मेरे दिल से लब तक[4] वही दुआएं

इक जामे-आख़िरी[5] तो पीना है और साक़ी
अब दस्ते-शौक़[6] कांपे या पांव लड़खड़ाएं

---

१. आशिक़ २. अभिमानी ३. अधिक चंचल ४. होंठों तक ५. अंतिम प्याला ६. इच्छा-रूपी हाथ

अब तो ये भी नहीं रहा एहसास
दर्द होता है या नहीं होता

इश्क़ जब तक न कर चुके रुसवा
आदमी काम का नहीं होता

हाय क्या हो गया तबीयत को
ग़म भी राहत-फ़ज़ा[1] नहीं होता

वो हमारे क़रीब होते हैं
जब हमारा पता नहीं होता

दिल को क्या-क्या सुकून[2] होता है
जब कोई आसरा नहीं होता

---

१. आनन्ददायक २. शान्ति

क्या चीज़ थी, क्या चीज़ थी ज़ालिम की नज़र भी
उफ़ करके वहीं बैठ गया दर्दे-जिगर भी

होती ही नहीं कम शबे-फ़ुर्क़त की[1] सियाही
रुख़्सत हुई क्या शाम के हमराह[2] सहर[3] भी

ये मुजरिमे-उल्फ़त[4] है, वो है मुजरिमे-दीदार[5]
दिल ले के चले हो तो लिए जाओ नज़र भी

क्या देखेंगे हम जल्वा-ए-महबूब[6] कि हमसे
देखी न गई देखने वाले की नज़र भी

वाइज़[7] न डरा मुझको क़ियामत की सहर से
देखी है इन आंखों ने क़ियामत की सहर भी

है फ़ैसला-ए-इश्क़ हीं मन्ज़ूर तो उठिए
अग़ियार[8] भी मौजूद हैं, हाज़िर है 'जिगर' भी

---

१. जुदाई की रात की २. साथ ३. सुबह ४. प्रेम करने का अपराधी ५. दर्शनाभिलाषा का अपराधी ६. प्रेयसी का जल्वा (दर्शन) ७. धर्मोपदेशक ८. ग़ैर

दिल को मिटा के दाग़े-तमन्ना[1] दिया मुझे
ऐ इश्क़ तेरी ख़ैर हो, ये क्या दिया मुझे

महशर[2] में बात भी न ज़बां से निकल सकी
क्या झुक के उस निगाह ने समझा दिया मुझे

मैं, और आर्ज़ु - ए - विसाले - परी - रुख़ां[3]
इस इश्क़े-सादालौह ने[4] बहका दिया मुझे

हर बार यास[5] हिज्र में[6] दिल की हुई शरीक[7]
हर मर्तबा उमीद ने धोका दिया मुझे

दावा किया था ज़ब्ते-मोहब्बत का[8] ऐ 'जिगर'
ज़ालिम ने बात-बात पे तड़पा दिया मुझे

---

१. कामना का दाग़ २. प्रलय ३. परियों ऐसे मुखड़े वालियों के मिलन की कामना ४. सरल स्वभाव वाले इश्क़ ने ५. निराशा ६. जुदाई में ७. साथी ८. प्रेम प्रकट न होने देने का

रूह[1] क़ालिब[2] से निकलकर अस्ल[3] में गुम हो गई
नै[4] से होते ही जुदा नग़मा[5] परीशां हो गया[6]

रूह जब तड़पी निगाहे-शौक़[7] आशिक़ बन गई
दिल जब उछला जल्वागाहे-हुस्ने-जानां[8] हो गया

एक मर्कज़[9] पर सिमट आया जहाने-आर्ज़ू[10]
कस्रते-मौहूम[11] से जब दिल परीशां हो गया

किसको देखा पर्दा-ए-ख़ाकी में अपने जल्वागर
डालते ही इक नज़र मग़रूर[12] इन्सां हो गया

चश्म पुरनम[13], ज़ुल्फ़ आशुफ़्ता[14], निगाहें बेक़रार[15]
इस पशेमानी[16] के सदक़े[17] मैं पशेमां[18] हो गया

वर्ना क्या था सिर्फ़ तर्तीबे-अनासिर[19] के सिवा
ख़ास कुछ बेताबियों का नाम इन्सां हो गया

---

१. आत्मा २. शरीर, देह ३. सत्य तत्त्व ४. बांसुरी ५. गान ६. बिखर गया ७. उत्कण्ठित दृष्टि ८. प्रेयसी के सौन्दर्य का छविगृह ९. केन्द्र १०. अभिलाषा की दुनिया ११. भ्रमों का बाहुल्य १२. गर्वित १३. भीगी आंखें १४. बिखरे बाल १५. बेचैन आंखें १६. लज्जा १७. निछावर १८. लज्जित १९. पंचभूतों की क्रमबद्धता

दिल मिरा तोड़कर कहा उसने ज़बाने-राज़[1] में
साज़[2] में नग़मे वो कहां हैं जो शिकस्ते-साज़[3] में

होके फ़ना-ए-ज़ाते-हक़[4] दिल मेरा सोज़ो-साज़ में
मर्कज़े-अस्ल[5] बन गया दायरा-ए-मजाज़[6] में

ख़ाक भी उस ग़रीब की, आह कि फिर न उठ सकी
तुमने जिसे मिटा दिया पर्दा-ए-इम्तियाज़ में[7]

दर्द का दिल बढ़ाए कौन पर्दा-ए-दर उठाए कौन
मौत को नींद आ गई ग़म के हरीमे-नाज़ में[8]

फैले पड़े हैं जिस क़दर हुस्न के जल्वा-ए-लतीफ़[9]
जी में है सब समेट लूं दामने-इम्तियाज़ में[10]

यूं हैं मेरी निगाह में नक़्शो-निगारे-कायनात[11]
आलमे-ख़्वाब[12] जिस तरह दीदए-नीम-बाज़ में[13]

---

१. रहस्य की भाषा २. वाद्य ३. टूटा वाद्य ४. ईश्वर के अस्तित्व में विलीन होकर ५. सत्य तत्त्व का केन्द्र, ब्रह्मकेन्द्र ६. माया की परिधि, भौतिक जगत् का घेरा ७. विवेक के पर्दे में ८. प्रेयसी के घर में ९. सौन्दर्य की मधुर झलकें १०. अपने विशिष्ट दामन में ११. संसार की मूर्तियों (प्रेम-यात्रियों) की रेखाएं १२. स्वप्न-संसार १३. अधखुली आंखों में

हज़ारों कुर्बतों पर[1] यूं मिरा महजूर[2] हो जाना
जहां से चाहना उनका वहीं से दूर हो जाना

निक़ाबे-रूए-नादीदा[3] का अज़ख़ुद[4] दूर हो जाना
मुबारक अपने हाथों हुस्न का मजबूर हो जाना

सरापा दीद[5] होकर ग़र्क़[6] मौजे-नूर[7] हो जाना
तिरा मिलना है ख़ुद हस्ती से अपनी दूर हो जाना

मोहब्बत क्या है, तासीरे-मोहब्बत किसको कहते हैं
तिरा मजबूर कर देना, मिरा मजबूर हो जाना

यकायक दिल की हालत देखकर मेरा तड़प उठना
उसी आलम[8] में फिर कुछ सोचकर मसरूर[9] हो जाना

'जिगर' वो हुस्ने-यकसूई[10] का मंज़र[11] याद है अब तक
निगाहों का सिमटना और हुजूमे-नूर[12] हो जाना

---

१. निकटताओं पर २. वियोगी ३. अदृश्य मुख का घूंघट ४. स्वयं ५. साकार दृष्टि ६. निमग्न ७. ज्योति-तरंग ८. अवस्था ९. आनन्दित १०. एकाग्र सौन्दर्य ११. दृश्य १२. ज्योति-पुंज

तिरे जल्वों में गुम होकर औ[1] खुद से बेखबर होकर
तमन्ना है कि रह जाऊं ज़सरतापा[2] नज़र होकर

हिजाब[3] अन्दर हिजाबो-जल्वा[4] अन्दर जल्वा क्या कहिए
बला में फंस गए उश्शाक़[5] पाबन्दे-नज़र[6] होकर

अब इस रहमत[7] के आगे हश्र में क्या हाथ फैलाएं
रहे वाबस्ता[8] जो मुझसे मिरा दामाने-तर[9] होकर

कहां जाती है मिलकर ओ निगाहे-नाज़ बेपर्दा
मिरे पहलू में रह जा लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर होकर

लताफ़त[10] मानए-नज़्ज़ारा-ए-सूरत[11] सही लेकिन
धड़कना दिल का कहता है वो गुज़रे हैं इधर होकर

---

१. और २. साकार ३. पर्दा ४. पर्दा-दर्शन ५. प्रेमीगण (आशिक़ का बहुवचन) ६. दृष्टि के बन्धन में बंधकर ७. कृपा, दया ८. सम्बद्ध ९. आशक्ति, पाप से भीगा अंचल १०. मृदुलता, नज़ाकत ११. रूप-दर्शन में बाधक

ख़ुद अपने अक्स[1] को अपने मुक़ाबिल देखने वाले
ज़रा आंखें तो खोल ओ नक़्शे-बातिल[2] देखने वाले

हक़ीक़त[3] को हक़ीक़त के मुक़ाबिल देखने वाले
मुझे भी देख मेरी हस्ती-ए-दिल[4] देखने वाले

नक़ूशे - पर्तवे - रंगीनी - ए - दिल[5] देखने वाले
कभी ख़ुद को भी देख ओ ख़ुद से ग़ाफ़िल[6] देखने वाले

मिरी हस्ती का हर ज़र्रा उड़ा जाता है मंज़िल से
मिरा मुंह देखते हैं, जज़्बे - मंज़िल[7] देखने वाले

उन्हें तह की खबर क्या ? गौहरे-मक़सद[8] को क्या जानें
ये सब हैं रक़्स मौजो-सुक़ो-साहिल[9] देखने वाले

इधर आ हर क़दम पर हुस्ने-मंज़िल[10] तुझको दिखला दूं
फ़लक[11] को यास[12] से मंज़िल-ब-मंज़िल देखने वाले

इन्हीं में खींचकर रूहे - मोहब्बत[13] मैंने भर दी है
मिरे अशआर[14] देखेंगे मिरा दिल देखने वाले

---

१. परछाईं, प्रतिबिम्ब २. असत् रूप ३. सत्य, ईश्वरत्व ४. दिल का अस्तित्व ५. दिल की रंगीनी की आभा की रूपरेखा ६. आत्मविस्मृत ७. मंज़िल का आकर्षण ८. ध्येय का मोती ९. तट की मादकता और तरंगों का नृत्य १०. मंज़िल का सौन्दर्य ११. आकाश १२. निराशा १३. प्रेम की आत्मा, प्रेम-तत्त्व, प्रेम-सार १४. शे'र का बहुवचन

लज़्ज़ते-बाक़ी[1] को ए ज़ौक़े-फ़ना[2] ! रहने भी दे
कुछ तो बह्रे-इम्तियाज़े-जानो-जानां[3] चाहिए

एक-दो चुल्लू में बुझती है कहीं रिन्दों की प्यास
हर निगाहे-मस्ते-साक़ी साग़रस्तां[4] चाहिए

आर्ज़ू-ओ-शौक़[5] तो है अंजुमन-दर-अंजुमन[6]
अब तिरा जलवा गुलिस्तां-दर-गुलिस्तां चाहिए

हुस्न की काफ़िर निगाहें इश्क़ का मासूम[7] दिल
अब तुझे क्या ऐ हयाते-फ़ित्ना-सामां[8] चाहिए

हुस्न बेताबे-तजल्ली खुद[9] है लेकिन ऐ 'जिगर'
एक हल्का-सा हिजाबे-चश्मे-हैरां[10] चाहिए

---

१. शेष स्वाद २. बिनाश की उत्कण्ठा या रसप्रियता ३. प्राण एवं प्राणप्रिया में भेद, विवेक ४. प्यालों का देश ५. कामना और उत्कण्ठा ६. महफ़िल के अन्दर महफ़िल ७. निरीह, निर्दोष ८. उपद्रव कर्ता जीवन ९. सौन्दर्य स्वयं अपनी ज्योति दिखाने को उत्सुक है १०. चकित नयनों का पर्दा

यक मय-ए-बेनाम[1] जो इस दिल के पैमाने में है
वो किसी शीशे में[2] है साक़ी न मयख़ाने में है

यूं तो साक़ी हर तरह की तेरे मयख़ाने में है
वो भी थोड़ी-सी जो इन आंखों के पैमाने में है

एक ऐसा राज़[3] भी दिल के निहांख़ाने[4] में है
लुत्फ़[5] जिसका कुछ समझने में न समझाने में है

एक कैफ़े - नातमामे दर्द की लज़्ज़त[6] ही क्या
दर्द की लज़्ज़त सरापा दर्द[7] बन जाने में है

फिर निक़ाब उसने उलट कर रूह ताज़ा फूंक दी
अब न का'बे में है सन्नाटा, न बुतख़ाने में[8] है

हुस्न की इक-इक अदा पर जानो-दिल सदक़े मगर
लुत्फ़ कुछ दामन बचाकर ही गुज़र जाने में है

---

१. एक अनाम मदिरा २. बोतल में ३. रहस्य ४. गोपनीय कक्ष ५. आनन्द ६. अपूर्ण पीड़ा के आनन्द का स्वाद ७. सिर से पैर तक पीड़ा ८. मन्दिर में

तुम इस दिले-वहशी[१] की वफ़ाओं पे न जाना
अपना न रहा जो, वो किसी का न रहेगा

मिट जाएगी जिस दिन मिरे सिज्दों की हक़ीक़त
दुनिया में तिरा नक़्शे-कफ़े-पा[२] न रहेगा

बेपर्दगिए-हुस्न[३] से हैं सब ये हिजाबात[४]
पर्दा जो गिरा दोगे तो पर्दा न रहेगा

वो लाख मिटाते रहें दुनिया-ए-तमन्ना[५]
कहते हैं जिसे दिल, कभी तन्हा[६] न रहेगा

माना लबे-नाज़ुक को[७] वो तकलीफ़ न देंगे
आंखों से भी क्या कोई इशारा न रहेगा

---

१. चंचल मन २. पदचिह्न ३. सौन्दर्य की बेपर्दगी ४. पर्दे
५. कामना का संसार ६. अकेला ७. कोमल होंठों को

निगाहों का मर्कज़[1] बना जा रहा हूं
मोहब्बत के हाथों लुटा जा रहा हूं

मैं क़तरा[2] हूं लेकिन ब-आग़ोशे-दरिया[3]
अज़ल[4] से अबद[5] तक बहा जा रहा हूं

वही हुस्न जिसके हैं ये सब मज़ाहिर[6]
उसी हुस्न में हल हुआ जा रहा हूं

न जाने कहां से न जाने किधर को
बस इक अपनी धुन में उड़ा जा रहा हूं

न इद्राके-हस्ती[7] न एहसासे-मस्ती[8]
जिधर चल पड़ा हूं चला जा रहा हूं

न सूरत न मानी[9] न पैदा न पिन्हां[10]
ये किस हुस्न में गुम हुआ जा रहा हूं

---

१. केन्द्र २. जलबिन्दु ३. समुद्र की गोद में ४. आदिकाल ५. अनन्त ६. अभिव्यक्तियां ७. जीवन का विवेक ८. मस्तीकी अनुभूति ९. न रूप, न अर्थ १०. न प्रत्यक्ष, न निहित

जो बजाय-ख़ुद[1] आह होती है
हाय वो क्या निगाह होती है

इक नज़र दिल की सम्त[2] देख तो लो
कैसे दुनिया तबाह होती है

यूं न पर्दा करो ख़ुदा के लिए
देखो दुनिया तबाह होती है

वो भी है यक मुक़ामे-इश्क़[3] जहां
हर तमन्ना गुनाह होती है

हासिले-हुस्नो-इश्क़[4] उसे समझो
वो जो पहली निगाह होती है

एक ऐसा भी वक़्त होता है
मुस्कराहट भी आह होती है

---

१. स्वयं अपने में २. ओर ३. प्रणय की एक स्थिति ४. सौन्दर्य एवं प्रेम की उपलब्धियां

हर इक सूरत हर इक तस्वीर मुबहम[1] होती जाती है
इलाही, क्या मिरी दीवानगी कम होती जाती है

ज़माना गर्मे-रफ़्तारे-तरक़्क़ी[2] होता जाता है
मगर इक चश्मे-शायर[3] है कि पुरनम[4] होती जाती है

यही जी चाहता है छेड़ते ही छेड़ते रहिए
बहुत दिलकश अदाए-हुस्ने-बरहम होती जाती है[5]

तसव्वुर[6] रफ़्ता-रफ़्ता[7] इक सरापा[8] बनता जाता है
वो इक शै जो मुझी में है, मुजस्सिम[9] होती जाती है

वो रह-रहकर गले मिल-मिलके रुख़सत होते जाते हैं
मिरी आंखों से या रब! रौशनी कम होती जाती है

'जिगर' तेरे सुकूते-ग़म[10] ने ये क्या कह दिया उनसे
झुकी पड़ती हैं नज़रें आंख पुरनम होती जाती है

---

१. अस्पष्ट २. प्रगतिशील ३. शायर की आंख ४. गीली
५. नाराज़ी में सौन्दर्य की अदा और चित्ताकर्षक होती जाती है
६. ध्यान ७. धीरे-धीरे ८, ९. साकार १०. ग़म के कारण चुप्पी

कहां-कहां उड़के शो'ले पहुंचे ये होश किसको ये कौन जाने,
हमें बस इतना है याद अब तक लगी थी आग अपने घर से पहले

कहां ये शोरिश[1], कहां ये मस्ती, कहां ये रंगीनियों का आलम
ज़माना ख़्वाबो-ख़याल[2]-सा था, तिरे फ़ुसूने-नज़र से[3] पहले

उठा जो चेहरे से पर्दा-ए-शब[4], सिमट के मर्कज़[5] पे आ गए सब
तमाम जल्वे जो मुन्तशिर[6] थे, तुलूए-हुस्ने-बशर से[7] पहले

वो यादे-आग़ाज़े-इश्क़[8] अब तक अनीसे-जानो-दिले-ह्ज़ीं[9] है,
वो इक झिझक-सी वो इक झपक-सी हर इल्तिफ़ाते-नज़र[10] से पहले

हमीं थे क्या जुस्तजू का हासिल, हमीं थे क्या आप अपनी मंज़िल
वहीं पे आकर ठहर गया दिल, चले थे जिस रहगुज़र[11] से पहले

हमारे शौक़े-जूनूं-अदा[12] की, सितमज़रीफ़ी[13] तो कोई देखे
कि नामाबर[14] को रवाना करके पहुंच गए नामाबर से पहले

कहां थी ये रूह में लताफ़त[15], कहां थी कौनैन[16] में ये वुसअत[17]
ह्यात[18] ही सो रही थी जैसे किसी की पहली नज़र से पहले

---

१. उपद्रव २. स्वप्न और कल्पना ३. दृष्टि के जादू से ४. रात्रि-पट ५. केन्द्र ६. बिखरे हुए ७. मानव-सौन्दर्य के उदय से ८. प्रेमारम्भ ९. दुःखी हृदय और प्राण का सखा १०. प्रणय-कटाक्ष ११. मार्ग १२. उत्कण्ठा के उन्माद की अदा १३. हंसी के पर्दे में अनीति १४. पत्रवाहक १५. स्वच्छता १६. लोक-परलोक १७. विशालता १८. ज़िन्दगी

ये दिन बहार के अब के भी रास आ न सके
कि गुंचे[1] खिल तो सके, खिल के मुस्करा न सके

ये आदमी है वो परवाना शमए-दानिश[2] का
जो रौशनी में रहे, रौशनी को पा न सके

न जाने आह कि उन आंसुओं पे क्या गुज़री
जो दिल से आंख तक आए, मिज़ह तक[3] आ न सके

करेंगे मर के बक़ा-ए-दवाम[4] क्या हासिल
जो ज़िन्दा रहके मुक़ामे-हयात[5] पा न सके

ज़हे ख़ुलूसे-मोहब्बत[6] कि हादिसाते-जहां[7]
तुझे तो क्या, मिरे नक़्शे-क़दम[8] मिटा न सके

उन्हें सआदते-मंज़िल-रसी[9] नसीब हो क्या
वो पांव, राहे-तलब में[10] जो डगमगा न सके

घटे अगर तो बस इक मुश्ते-ख़ाक[11] है इन्सां
बढ़े तो वुसअ़ते-कौनैन[12] में समा न सके

---

१. कलियां २. विवेक रूपी दीपक ३. पलकों तक ४. अमरत्व ५. जीवन का स्थान ६. वाह रे प्रेम की सच्चाई ७. संसार की विपत्तियां ८. पदचिह्न ९. मंज़िल तक पहुंचने का गौरव १०. प्रेम-मार्ग ११. मुट्ठी-भर मिट्टी १२. दोनों लोकों की विशालता

फिर दिल है क़स्दे-कूचा-ए-जानां[1] किए हुए
रग-रग में नेशे-इश्क़ को[2] पिन्हां[3] किए हुए

फिर उज़लते-ख़याल से[4] घबरा रहा है दिल
हर वुसअ़ते-ख़याल को[5] ज़िन्दां[6] किए हुए

फिर चश्मे-शौक़[7] देर से लबरेज़े-शिकवा[8] है
क़तरों को मौज[9], मौज को तूफ़ां किए हुए

फिर है निगाहे-शौक़ को दीदार की हवस
मुद्दत हुई है जुर्अ़ते-इस्यां[10] किए हुए

फिर जी ये चाहता है कि बैठे रहें 'जिगर'
उन की नज़र से भी उन्हें पिन्हां किए हुए

---

१. प्रेयसी की गली में जाने का संकल्प २. इश्क़ के डंक को ३. निहित ४. विचारों के एकांत से ५. विचारों के विस्तार को ६. कारागार ७. इश्क़ रूपी आंख ८. शिकायत-भरी ९. लहर १०. पाप (करने) का साहस

इश्क़ की बर्बादियों को रायगां[1] समझा था मैं
बस्तियां निकलीं, जिन्हें वीरानियां समझा था मैं

हर निगह[2] को तबए-नाज़ुक[3] पर गरां[4] समझा था मैं
सामने की बात थी, लेकिन कहां समझा था मैं

क्या ख़बर थी ख़ुद वो निकलेंगे बराबर के शरीक[5]
दिल की हर धड़कन को अपनी दास्तां समझा था मैं

ज़िन्दगी निकली मुसलसल[6] इम्तिहां-दर-इम्तिहां[7]
ज़िन्दगी को दास्तां ही दास्तां समझा था मैं

मेरी ही रूदादे-हस्ती[8] थी मिरे ही सामने
आज तक जिसको हदीसे-दीगरां[9] समझा था मैं

---

१. व्यर्थ २. नज़र ३. कोमल तबियत ४. भारी, अप्रिय ५. साथी ६. निरंतर ७. एक पर एक परीक्षा ८. आपबीती ९. जगबीती

यही है सब से बढ़कर महरमे-असरार[1] हो जाना
मयस्सर[2] हो अगर अपना हमें दीदार हो जाना

मोहब्बत में कहां मुमकिन, ज़लीलो-ख्वार हो जाना
कि पहली शर्त है इन्सान का ख़ुद्दार हो जाना

खुलेगा चारागर[3] पर राज़े-ग़म क्या दर्द के होते
कि आता है इसे खुद नब्ज़ की रफ़्तार हो जाना

विसालो-हिज्र के[4] झगड़ों ने फ़ुर्सत ही न दी वर्ना
मआले-आशिक़ी[5] था रूह का बेदार[6] हो जाना

ज़बां गो चुप हुई, दिल में तलातुम है वही बर्पा[7]
न आया आज तक मह्‌वे-ख़याले-यार[8] हो जाना

---

१. रहस्यों का मर्मज्ञ २. उपलब्ध ३. उपचारक ४. मिलन और जुदाई के ५. आशिक़ी का परिणाम ६. जाग्रत् ७. वही तूफ़ान मचा हुआ है ८. प्रेयसी या ख़ुदा के खयाल में सब कुछ भूला हुआ

दास्ताने-ग़मे-दिल[1] उन को सुनाई न गई
बात बिगड़ी थी कुछ ऐसी कि बनाई न गई

सब को हम भूल गए जोशे-जुनूं में[2] लेकिन
इक तिरी याद थी ऐसी जो भुलाई न गई

इश्क़ पर कुछ न चला दीदा-ए-तर का[3] क़ाबू
उसने जो आग लगा दी वो बुझाई न गई

क्या उठाएगी सबा[4] ख़ाक मिरी उस दर से[5]
ये क़ियामत तो ख़ुद उन से उठाई न गई

दिले-हज़ीं की[6] तमन्ना दिले-हज़ीं में रही
ये जिस ज़मीं की थी दुनिया उसी ज़मीं में रही

हिजाब[7] बन न गई हों हक़ीक़तें[8] बाहम[9]
कि बेसबब तो कशाकश[10] न कुफ़्र-ओ-दीं में[11] रही

सरे-नियाज़[12] न जब तक किसी के दर पे[13] झुका
बराबर इक ख़लिश-सी[14] मिरी जबीं में[15] रही

---

१. दिल के ग़म की कहानी २. उन्माद के जोश में ३. सजल नेत्रों का ४. प्रभात-समीर ५. दरवाज़े से ६. उदास मन की ७. पर्दा ८. वास्तविकताएं ९. परस्पर १०. खींचातानी ११. धर्म-अधर्म में १२. श्रद्धापूर्ण सिर १३. दरवाज़े पर १४. चुभन १५. माथे में

इश्क़ ने ख़िदमते-दुश्वार[1] वो की है तफ़्वीज़[2]
ख़ुद से मिलने की भी मिलती नहीं फ़ुर्सत मुझको

इल्म[3] के जह्‌ल[4] से बेहतर है कहीं जह्‌ल का इल्म
मिरे दिल ने ये दिया दर्से-बसीरत[5] मुझको

उड़ चला है निगहे-यार से[6] शोख़ी लेकर
अब जो मुमकिन हो तो रोके मेरी हैरत[7] मुझको

ले लिया काम जो लेना था, ग़मे-हस्ती ने[8]
गरचय[9] साबित न हुई मेरी ज़रूरत मुझको

समझ कर फूंकना उसको ज़रा ऐ दाग़े-नाकामी[10]
बहुत से घर भी हैं आबाद इस उजड़े हुए दिल से

मोहब्बत में क़दम रखते ही गुम होना पड़ा मुझको
निकल आईं हज़ारों मंज़िलें, एक-एक मंज़िल से

बयां क्यों हों यहां की मुश्किलें, बस मुख़्तसर ये है
वही अच्छे हैं कुछ, जो जिस क़दर हैं दूर मंज़िल से

---

१. कठिन सेवा २. सौंपी है ३. ज्ञान ४. मूर्खता ५. सच्चे ज्ञान का पाठ ६. प्रेयसी की नज़रों से ७. आश्चर्य ८. जीवन के ग़म ने ९. यद्यपि १०. असफलता के दाग़

फ़ुर्सत कहां कि छेड़ करें ग्रास्मां से हम
लिपटे पड़े हैं लज़्ज़ते दर्दे-निहां से[1] हम

इस दर्जा बेक़रार थे दर्दे-निहां से हम
कुछ दूर ग्रागे बढ़ गए उम्रे-रवां से[2] हम

ऐ चारा-साज़[3] ! हालते-दर्दे-निहां[4] न पूछ
इक राज़ है जो कह नहीं सकते ज़बां से हम

बैठे ही बैठे ग्रा गया क्या जाने क्या खयाल
पहरों लिपट के रोए दिले-नातुवां से[5] हम

ग्रपनी-ग्रपनी वुसअ़ते-फ़िक्रो-यक़ीं की[6] बात है
जिसने जो ग्रालम[7] बना डाला, वो उस का हो गया

मैंने जिस बुत पर नज़र डाली जुनूने-शौक़ में[8]
देखता क्या हूं, वो तेरा ही सरापा[9] हो गया

उठ सका न हम से बारे-इल्तिफ़ाते-नाज़[10] भी
मरहबा[11], वो जिसको तेरा ग़म गवारा हो गया

---

१. भीतरी वेदना के ग्रानन्द से २. गतिशील ग्रायु (जीवन) ३. उपचारक ४. भीतरी वेदना की स्थिति ५. निर्बल मन ६. विचारों ग्रौर विश्वासों की विशालता की ७. स्थिति, संसार ८. इश्क़ के उन्माद में ९. सिर से पैर तक १०. प्रेयसी की कृपाग्रों का बोझ ११. धन्य है

निगाहों से छुपकर कहां जाइएगा
जहां जाइएगा, हमें पाइएगा

मिटा कर हमें आप पछताइएगा
कमी कोई महसूस फ़र्माइएगा

नहीं खेल नासेह[1] ! जुनूं की हक़ीक़त[2]
समझ लीजिएगा तो समझाइएगा

कहीं चुप रही है ज़बाने-मोहब्बत[3]
न फ़र्माइएगा तो फ़र्माइएगा

न जाने दिल में वो क्या सोचते रहे पैहम[4]
मिरे जनाज़े पे ता-देर[5] सर झुकाए हुए

उन्हीं में राज़े - मोहब्बत किसी का पिन्हां[6] था
जो ख़ुश्क हो गए आंसू, मिज़ा तक[7] आए हुए

हुदूदे-कूचा-ए-महबूब[8] हैं वहीं से शुरू
जहां से पड़ने लगें पांव डगमगाए हुए

---

१. धर्मोपदेशक २. उन्माद की वास्तविकता ३. प्रेम की ज़बान ४. निरन्तर ५. देर तक ६. निहित ७. पलकों तक ८. प्रेयसी की गली की सीमाएं

यूं भी मुझे तो हासिल आरामे-जां[1] नहीं है
अब तू जो मेहृबां है, दिल मेहृबां नहीं है

जो दास्तां है अपनी, अफ़साना है किसी का
शायद मिरे दहन में[2], मेरी ज़बां नहीं है

हां ऐ जमाले-जानां[3], इक और भी तजल्ली[4]
दुनिया मिरी नज़र में, जब तक जवां नहीं है

शायद तिरी नज़र से कुछ राज़े-दिल समझ लूं
कहते हैं इश्क़ जिसको, मेरी ज़बां नहीं है

नज़र मिलते ही दिल को वक़्फ़े-तस्लीमो-रज़ा[5] कर दे
जहां से इब्तिदा[6] की है वहीं पर इन्तिहा[7] कर दे

वफ़ा पर दिल को सदक़े, जान को नज़्रे-जफ़ा[8] कर दे
मोहब्बत में ये लाज़िम[9] है कि जो कुछ हो फ़ना कर दे

चमन दूर, आशियां[10] बर्बाद, ये टूटे हुए बाज़ू
मिरा क्या हाल हो, सय्याद[11] गर मुझको रिहा कर दे

---

१. जान अर्थात् तन-मन का सुख २. मुंह में ३. प्रेयसी की सुन्दरता ४. प्रभा, झलक ५. उनकी इच्छा के अर्पण ६. प्रारंभ ७. अंत ८. बेवफ़ाई या अत्याचार की भेंट ९. आवश्यक १०. घोंसला ११. शिकारी

क्या बराबर का मोहब्बत में असर होता है
दिल इधर होता है, ज़ालिम न उधर होता है

हमने क्या कुछ न किया, दीदा-ओ-दिल की[1] खातिर
लोग कहते हैं दुआओं में असर होता है

दिल तो यूं दिल से मिलाया कि न रक्खा मेरा
अब नज़र के लिए क्या हुक्मे-नज़र[2] होता है

कौन देखे उसे बेताबे-मोहब्बत[3] ऐ दिल
तू वो नाले[4] ही न कर, जिन में असर होता है

जो ज़ीस्त[5] को न समझें, जो मौत को न जानें
जीना उन्हीं का जीना, मरना उन्हीं का मरना

दरिया की ज़िंदगी पर सदक़े हज़ार जानें
मुझको नहीं गवारा साहिल की मौत मरना

कुछ आ चली है आहट उस पाए-नाज़ की[6] सी
तुझ पर खुदा की रहमत, ऐ दिल ज़रा ठहरना

---

१. दिल और आंखों की २. नज़र या दृष्टि को आदेश ३. प्रेम में व्याकुल ४. आर्तनाद ५. जीवन ६. प्रेयसी के पैरों की

दिल में तुम हो, नज्म़ का[1] हंगाम[2] है
कुछ सहर[3] का वक़्त है कुछ शाम है

इश्क़ ही ख़ुद इश्क़ का इन्आ़म है
वाह क्या आग़ाज़[4], क्या अंजाम[5] है

पीने वाले एक ही दो हों तो हों
मुफ़्त सारा मैकदा[6] बदनाम है

दर्दो-ग़म दिल की तबीअ़त बन चुके
अब यहां आराम ही आराम है

मुझे ऐ शोरे-महशर[7] तूने क्यों चौंका दिया उठकर
बलाएं ले रहा था, बेख़ुदी में[8] अपने क़ातिल की

न तोड़ ऐ दस्ते-गुलचीं[9] बाग़ में फूलों की कलियों को
कि इन में कुछ शबाहत[10] पाई जाती है मिरे दिल की

'जिगर' मैंने छुपाया लाख अपना दर्दे-ग़म लेकिन
बयां कर दीं मेरी सूरत ने सब कैफ़ियतें[11] दिल की

---

१. चन्द्रा, जांकनी का २. समय ३. सुबह ४. प्रारंभ ५. अंत ६. मधुशाला ७. ऐ प्रलय के शोर ८. आत्म-विस्मृति में ९. माली के हाथ १०. रूप-रंग (मुखाकृति) ११. स्थितियां

ख़ार को[1] गुल[2] और गुल को जो चाहे करे
तूने जो चाहा किया औ'[3] यार जो चाहे करे

मस्तो-बेख़ुद[4], आक़िलो-हुशियार[5] जो चाहे करे
शोख़ी - ए - तर्ज़ - तपाके - यार[6] जो चाहे करे

उसने ये कहकर दिया दिल को फ़रेबे-जुस्तजू[7]
हश्र[8] तक अब आशिक़े-नाचार[9] जो चाहे करे

हर हक़ीक़त हुस्न की है बेनियाज़े-एतिराफ़[10]
अब कोई इक़रार या इन्कार जो चाहे करे

कहां दूर हट के जाएं हम दिल की सरज़मीं से[11]
दोनों जहां की सैरें हासिल हैं सब यहीं से

ये राज़ सुन रहे हैं, इक मौजे-तहनशीं से[12]
डूबे हैं हम जहां पर, उभरेंगे फिर वहीं से

इन्कार और उस पर इसरार[13] वो भी पैहम[14]
तुम मुझको चाहते हो साबित हुआ यहीं से

---

१. कांटे को २. फूल ३. और ४. मस्त और उन्मत्त ५. बुद्धिमान और सावधान ६. प्रेयसी के स्नेह जताने का चंचल ढंग ७. तलाश का धोखा ८. प्रलय (जब कर्मों का हिसाब होगा) ९. विवश प्रेमी १०. स्वीकृति से बेपरवा ११. धरती (सीमाओं) से १२. तह में बहने वाली लहर से १३. आग्रह १४. निरन्तर

कम न था ये आलमे-हस्ती[1] किसी सूरत मगर
वुसअ़तें[2] दिल की बढ़ीं इतनी कि ज़िन्दां[3] हो गया

छूट सकता था कहीं इस जिस्म से दामाने-रूह[4]
फिर कभी मिलने का शायद अ़हदो-पैमां[5] हो गया

वर्ना क्या था, सिर्फ़ तरतीबे-अ़नासिर के[6] सिवा
ख़ास कुछ बेताबियों का नाम इन्सां हो गया

तै मंज़िलें हुई हैं यूं इश्क़-ओ-आरज़ू की
कुछ मैंनें जुस्तजू की, कुछ उसने जुस्तजू की

अब क्या जवाब दूं मैं, कोई मुझे बताए
वो मुझ से कह रहे हैं क्यों मेरी आरज़ू की

मायूस हो के पलटीं जब हर तरफ़ से नज़रें
दिल ही को बुत बनाया, दिल ही से गुफ़्तगू की

---

१. अस्तित्व की स्थिति २. विशालताएं ३. जेलख़ाना
४. आत्मा रूपी पल्लू ५. वचन, प्रतिज्ञा ६. तत्वों के अनुक्रम के

क्या बताएं इश्क़ ज़ालिम क्या क़ियामत ढाए है
ये समझ लो जैसे दिल सीने से निकला जाए है

जब नहीं तुम तो तसव्वुर[1] भी तुम्हारा क्या ज़रूर
उस से भी कह दो कि ये तकलीफ़ क्यों फ़र्माए है

हाय वो आ़लम[2] न पूछो इज़्तिराबे-इश्क़ का[3]
यक-ब-यक जिस वक़्त कुछ होश सा आ जाए है

किस तरफ़ जाऊं ? किधर देखूं, किसे आवाज़ दूं
ए हुजूमे-नामुरादी[4] ! जी बहुत घबराए है

⸙

इश्क़ ही के हाथों में कुछ सकत[5] नहीं रहती
वर्ना चीज़ ही क्या है गोशा-ए-नक़ाब[6] उनका

अर्ज़े-ग़म न कर ऐ दिल, देख हम न कहते थे
रह गए वो 'ऊंह' करके, सुन लिया जवाब उनका

तू 'जिगर' जो रुसवा है, तू ही आह रुसवा रह
नाम तो न कर रुसवा ख़ानमा-ख़राब[7] उन का

---

१. कल्पना २. स्थिति ३. इश्क़ की व्याकुलता का ४. विफलताओं के समूह (आधिक्य) ५. शक्ति ६. नकाब का किनारा, पल्लू ७. ऐ उजड़े घर वाले (सत्यानाशी)

रखते हैं ख़िज़्र[1] से, न गरज़ रहनुमा से हम
चलते हैं बच के दूर हर इक नक़्शे-पा[2] से हम

मानूस[3] हो चले हैं जो दिल की सदा[4] से हम
शायद कि जी उठें तिरी आवाज़े-पा से हम

ओ मस्ते-नाज़े-हुस्न[5], तुझे कुछ खबर भी है
तुझ पर निसार होते हैं किस-किस अदा से हम

ये कौन छा गया है दिल-ओ-दीदा पर[6] कि आज
अपनी नज़र में आप हैं, नाआशना-से[7] हम

उन को भी नाज़े-फ़तह[8] हो तो बात है
मुझको तो हर शिकस्त ने मग़रूर[9] कर दिया

हुस्ने-अज़ल[10] तो आज भी बेपर्दा है मगर
नज़्ज़ारा के हुजूम[11] ने मस्तूर कर दिया[12]

तौबा[13] तो कर चुका था, मगर इस का क्या इलाज
वाइज़[14] की ज़िद ने फिर मुझे मजबूर कर दिया

---

१. एक पैग़म्बर (पथ-प्रदर्शक) २. पदचिह्न से ३. परिचित ४. पद-ध्वनि ५. सुन्दरता के घमंड में मस्त ६. दिल और आंखों पर ७. अपरिचित से ८. विजय का गर्व ९. अभिमानी १०. आदि-कालीन सौन्दर्य ११. प्रकट के आधिक्य १२. छिपा दिया १३. शराब पीने से तौबा १४. धर्मोपदेशक

ये मैकशी[1] है तो फिर शाने-मैकशी क्या है
बहक न जाए जो पीकर, वो रिंद[2] ही क्या है

बस एक सम्त[3] उड़ा जा रहा हूं वहशत में[4]
ख़बर नहीं कि ख़ुदी[5] क्या है बेख़ुदी[6] क्या है

मैं ज़ह्रे-मर्ग[7] गवारा करूं कि तल्ख़ी-ए-ज़ीस्त[8]
मिरी ख़ुशी तो है सब कुछ, तिरी ख़ुशी क्या है

ये दर्स[9] मैंने लिया मक्तबे-मोहब्बत से[10]
किसी तरह जो बहल जाए ज़िन्दगी क्या है

नियाज़े-आशिक़ी को[11] नाज़ के क़ाबिल समझते हैं
हम अपने दिल को भी अब आप ही का दिल समझते हैं

अदम[12] की राह में रक्खा है पहला ही क़दम मैंने
मगर अहबाब[13] इस को आख़िरी मंज़िल समझते हैं

इलाही एक दिल है, तू ही इस का फ़ैसला कर दे
वो अपना दिल बताते हैं, हम अपना दिल समझते हैं

---

१. मदिरापान २. मद्यप ३. ओर ४. घबराहट में ५. अहं ६. आत्मविसर्जन ७. मृत्यु रूपी विष ८. जीवन की कटुता ९. पाठ १०. प्रेम की पाठशाला में ११. आशिक़ी की नम्रता या श्रद्धा १२. अनस्तित्व १३. मित्रगण

कौन ये जाने-तमन्ना[1] इश्क़ की मंज़िल में है
जो तमन्ना दिल से निकली, फिर जो देखा दिल में है

उठ गया आख़िर मोहब्बत का भी पर्दा उठ गया
अब न मेरे दिल में हसरत है, न उस के दिल में है

देखिए करती है क्या-क्या उन की नज़रों में हक़ीर[2]
ये जो ज़ालिम इक लहू की बूंद अब तक दिल में है

बेख़ुदी[3] मंज़िल से भी कोसों निकल आई 'जिगर'
जुस्तजू आवारा अब तक जादा-ए-मंज़िल में[4] है

❦

इक से बेगाना बन रहे हैं, किसी की जानिब नज़र नहीं है
बर वो रखते हैं इस तरह से कि जैसे कोई ख़बर नहीं है

के नहीं मुझ से रब्ते-असलन[5], ये मैंने माना, मगर ये बतला
रे तसव्वुर में[6] क्यों है ऐसा, तिरी तवज्जुह अगर नहीं है

ाब मैकश[7], जमाल[8] मैकश, ख़याल मैकश, निगाह मैकश
बर वो रक्खेंगे क्या किसी की, उन्हें ख़ुद अपनी ख़बर नहीं है

---

१. अभिलाषा की जान (प्रेयसी) २. तुच्छ ३. आत्मविस्मृति
. मंज़िल के मार्ग में ५. वास्तविक सम्बन्ध ६. कल्पना में ७. यौवन
द्यप है ८. सौन्दर्य

इश्क़ को बेनक़ाब होना था
आप अपना जवाब होना था

तेरी आंखों का कुछ क़ुसूर नहीं
हां, मुझी को ख़राब होना था

दिल कि जिस पर है नक़्शे-रंगा-रंग[1]
उस को सादा किताब होना था

हमने नाकामियों को ढूंड लिया
आख़िरश कामियाब होना था

अर्श से[2] हो के जो मायूस दुआएं आईं
मैं ये समझा कि मिरे घर में बलाएं आईं

मैंने जब शर्म से महशर में[3] झुका ली गर्दन
बख़्शवाने को मुझे मेरी ख़ताएं आईं

कीजिए और कोई ज़ुल्म अगर ज़िद है यही
लीजिए, और मिरे लब पे[4] दुआएं आईं

---

१. रंगा-रंग चित्र २. सातवें आकाश से ३. प्रलय क्षेत्र में
४. होंठों पर

अर्जे-नियज़े-ग़म[1] को, लब-आशना[2] न करना
ये भी इक इल्तिजा है, कुछ इल्तिजा न करना

जब याद आ गया है पहरों रुला गया है
दिल का वो मुझसे कहना, मुझ को जुदा न करना

दिल जब से मर मिटा है, कुछ और ही फ़ज़ा[3] है
मेरी ये इल्तिजा है, तुम सामना न करना

दिल से ख़ता हुई तो अब दिल है और मैं हूं
नाज़ुक मुआमला है, तुम फ़ैसला न करना

निगाहें क्या कि पहरों दिल भी वाक़िफ़ हो नहीं सकता
ज़बाने-हुस्न से ऐसा भी कुछ इर्शाद होता है

तुम्हीं हो तानाज़न[4] मुझ पर तुम्हीं इन्साफ़ से कह दो
कोई अपनी ख़ुशी से ख़ानमा-बर्बाद[5] होता है

कोई हद ही नहीं शायद मोहब्बत के फ़साने की
सुनाता जा रहा है, जिसको जितना याद होता है

---

१. (उसके दिए) ग़म-सम्बन्धी प्रार्थना २. होंठों से परिचित करना अर्थात् ज़बान पर लाना ३. वातावरण ४. ताना दे रहे हो ५. जिसका घर लुट गया हो

मेरा जो हाल हो सो हो बर्क़े-नज़र[1] गिराए जा
मैं युंही नालाकश रहूं[2] तू युंही मुस्कराए जा

लहज़ा-ब-लहज़ा[3], दम-ब-दम, जल्वा-ब-जल्वा[4] आए जा
तिश्ना-ए-हुस्ने-ज़ात[5] हूं तिश्नालबी[6] बढ़ाए जा

जितनी भी आज पी सकूं उज़्र[7] न कर पिलाए जा
मस्त नज़र का वास्ता, मस्ते-नज़र[8] बनाए जा

लुत्फ़[9] से हो कि क़हर[10] से होगा कभी तो रूबरू[11]
उसका जहां पता चले शोर वहीं मचाए जा

कहता है सरे-हश्र[12] ये दीवाना किसी का
जन्नत से अलग चाहिए वीराना किसी का

आपस में उलझते हैं अबस[13] शैखो-बिरहमन
का'बा न किसी का है न बुतख़ाना[14] किसी का

बेसाख़्ता[15] आज उसके भी आंसू निकल आए
देखा न गया हाल फ़क़ीराना किसी का

---

१. नज़र की बिजली २. आर्तनाद करता रहूं ३. क्षण-प्रतिक्षण ४. दर्शन देता हुआ ५. तुम्हारी सुन्दरता का प्यासा ६. प्यास ७. आपत्ति ८. नज़रों द्वारा मस्त ९. प्रेम १०. अति क्रोध ११. सम्मुख १२. प्रलय क्षेत्र में १३. व्यर्थ १४. मन्दिर १५. आप ही आप

मजबूरी-ए-कमाले-मोहब्बत[1] तो देखना
जीना नहीं क़ुबूल जिए जा रहा हूं मैं

वो दिल कहां है अब कि जिसे प्यार कीजिए
मजबूरियां हैं साथ दिए जा रहा हूं मैं

रुख़सत हुई शराब के हमराह ज़िन्दगी
कहने की बात है कि जिए जा रहा हूं मैं

पहले शराब ज़ीस्त[2] थी अब ज़ीस्त है शराब
कोई पिला रहा है पिए जा रहा हूं मैं

ऐ ग़मे-दोस्त तिरा सब्र मुझी पर टूटे
बे तिरे नींद भी आंखों में अगर आई हो

वो मोहब्बत ही नहीं है, वो क़ियामत ही नहीं
जो तिरे पा-ए-निगारीं की[3] न ठुकराई हो

हो गई दिल को तिरी याद से इक निस्बते-ख़ास[4]
अब तो शायद ही मुयस्सर[5] कभी तन्हाई हो

---

१. प्रेम-पराकाष्ठा की विवशता २. जीवन ३. सुन्दर पांव की
४. विशेष सम्बन्ध ५. प्राप्त

दुनिया के सितम याद न अपनी ही वफ़ा याद
अब मुझ को नहीं कुछ भी मोहब्बत के सिवा याद

छेड़ा था जिसे पहले-पहल तेरी नज़र ने
अब तक है वो इक नग़मा-ए-बेसाज़-ओ-सदा[1] याद

क्या जानिए क्या हो गया अरबाबे-जुनूं को[2]
मरने की अदा याद न जीने की अदा याद

मुद्दत हुई इक हादिसा-ए-इश्क़[3] को लेकिन
अब तक है तिरे दिल के धड़कने की सदा याद

क्या लुत्फ़ कि मैं अपना पता आप बताऊं
कीजै कोई भूली हुई ख़ास अपनी अदा याद

हम को मिटा सके ये ज़माने में दम नहीं
हम से ज़माना ख़ुद है, ज़माने से हम नहीं

या रब हुजूमे-दर्द[4] को दे और वुसअ़तें[5]
दामन तो क्या अभी मिरी आंखें भी नम[6] नहीं

शिकवा तो एक छेड़ है, लेकिन हक़ीक़तन[7]
तेरा सितम भी तेरी इनायत[8] से कम नहीं

---

१. बिना साज़ और आवाज़ का गीत २. उन्मादी व्यक्तियों को ३. प्रेम-रूपी दुर्घटना ४. पीड़ाओं का समूह (आधिक्य) ५. विशालताएं ६. सजल ७. वास्तव में ८. कृपा

कहां वो शोख़, मुलाक़ात ख़ुद से भी न हुई
बस एक बार हुई और फिर कभी न हुई

ठहर-ठहर दिले-बेताब प्यार तो कर लूं
अब इसके बाद मुलाक़ात फिर हुई न हुई

वो कुछ सही न सही फिर भी ज़ाहिदे-नादां[1]
बड़े-बड़ों से मोहब्बत में काफ़िरी न हुई

इधर से भी है सवा कुछ उधर की मजबूरी
कि हम ने आह तो की उन से आह भी न हुई

आए ज़बां पे राज़े-मोहब्बत मुहाल[2] है
तुम से मुझे अज़ीज़[3] तुम्हारा ख़याल है

दिल था तिरे ख़याल से पहले चमन-चमन
अब भी रविश-रविश[4] है, मगर पायमाल[5] है

कमबख़्त इस जुनूने-मोहब्बत[6] को क्या करूं
मेरा ख़याल है न तुम्हारा ख़याल है

१. नादान विरक्त २. कठिन ३. प्रिय ४. क्यारियों के बीच के छोटे मार्ग ५. रौंदा हुआ ६. प्रेमोन्माद

नाला[1] पाबंदे-नफ़स[2], ऐ दिले-नाशाद[3] नहीं
ये तो फ़र्याद की तौहीन है, फ़र्याद नहीं

अब ये क्या बात है, आबाद नहीं, शाद[4] नहीं
दिल गुज़रगाह[5] तिरी है, तुझे क्या याद नहीं

देखना बेख़ुदी-ए-इश्क़ का एजाज़[6] 'जिगर'
कह रहा हूं वो फ़साना जो मुझे याद नहीं

दिल है क़दमों पर किसी के सर झुका हो या न हो
बन्दगी[7] तो अपनी फ़ितरत[8] है ख़ुदा हो या न हो

ये जुनूं भी क्या जुनूं[9], ये हाल भी क्या हाल है
हम कहे जाते हैं, कोई सुन रहा हो या न हो

मुझे तो रश्क आता है[10] ग़मे-जानां की हस्ती पर[11]
बदल ले काश अपनी ज़िन्दगी से ज़िन्दगी मेरी

उसे सैयाद ने[12] कुछ, गुल ने[13] कुछ, बुलबुल ने कुछ समझा
चमन में कितनी मानीख़ेज़[14] थी इक ख़ामुशी मेरी

---

१. आर्तनाद २. श्वासों का पाबंद ३. दुःखी मन ४. प्रसन्न ५. पथ ६. चमत्कार ७. उपासना ८. प्रकृति ९. उन्माद १०. ईर्ष्या होती है ११. प्रेयसी के ग़म के अस्तित्व पर १२. शिकारी १३. फूल ने १४. अर्थपूर्ण

और भी मेरे लिए आफ़त का सामां[1] हो गईं
हाए वो मख़्मूर[2] आंखें जब पशेमां[3] हो गईं

धज्जियां बाक़ी हैं जितनी अब मिरे किस काम की
जो गिरेबां होने वाली थीं, गिरेबां हो गईं

अब कहां दिल की तमन्नाओं की बज़्म आराइयां[4]
आंख झपकी थी कि सब ख़्वाबे-परीशां[5] हो गईं

है इन्हीं धोकों से दिल की ज़िन्दगी
जो हसीं धोका हो खाना चाहिए

उनसे मिलने को तो क्या कहिए 'जिगर'
ख़ुद से मिलने को ज़माना चाहिए

अच्छा है पास गर कोई ग़म-ख़्वार भी नहीं
अब मेरा हाल लाइक़े-इज़्हार[6] भी नहीं

दिल में हुजूमे-शौक़ का आ़लम[7] न पूछिए
गुंजाइशे-ख़याले-रुख़े-यार[8] भी नहीं

---

१. सामान, साधन २. नशीली ३. लज्जित ४. सजी महफ़िलें (समूह) ५. बिखरा या टूटा सपना ६. बताने के योग्य ७. अभिलाषाओं के समूह की स्थिति ८. प्रेयसी के चेहरे की कल्पना की गुंजाइश

अल्लाह-अल्लाह ये तिरी तर्के-तलब की[1] वुसअ़तें[2]
रफ़्ता-रफ़्ता[3] सामने हुस्ने-तमाम[4] आ ही गया

अव्वल-अव्वल[5] हर क़दम पर थीं हज़ारों मंज़िलें
आख़िर-आख़िर[6] इक मुक़ामे-बेमुक़ाम[7] आ ही गया

सुहबते-रिन्दां से[8] वाइज़[9] कुछ न हासिल कर सका
बहका-बहका सा मगर तर्ज़े-कलाम[10] आ ही गया

पहले तो अर्ज़े-ग़म[11] पे वो झुंझला के रह गए
फिर कुछ समझ के, सोच के, शर्मा के रह गए

वो कौन है कि जो सरे-मंज़िल[12] पहुंच सका
धुंदले-से-कुछ निशान नज़र आ के रह गए

ठेस लग जाए न उनकी हसरते-दीदार को[13]
ऐ हुजूमे-ग़म[14] संभलने दे ज़रा बीमार को

फ़िक्र है ज़ाहिद को[15] हूरो-कौसरो-तसनीम की[16]
और हम जन्नत समझते हैं तिरे दीदार को[17]

---

१. त्यागने और प्राप्त करने की २. विशालताएं ३. क्रमशः ४. पूर्ण सौन्दर्य (खुदा) ५. पहले-पहले ६. अंत में ७. स्थान रहित स्थान ८. मद्यपों की संगति से ९. धर्मोपदेशक १०. बोलने का ढंग ११. ग़मयुक्त प्रणय-निवेदन १२. मंज़िल तक १३. दर्शनों की अभिलाषा को १४. ग़मों के समूह (आधिक्य) १५. विरक्त को १६. हूरों और जन्नत में बहने वाली दूध और शहद की नदियां १७. दर्शनों को

कुछ शे'र

कब तक आखिर मुश्किलाते-शौक़[1] आसां कीजिए
अब मोहब्बत को मोहब्बत पर ही क़ुर्बां कीजिए

चाहता है इश्क़, राज़े-इश्क़ उरियां[2] कीजिए
यानी खुद खो जाइए, उनको नुमायां कीजिए

लाखों में इन्तिखाब के क़ाबिल बना दिया
जिस दिल को तुमने देख लिया दिल बना दिया

पहले कहां ये नाज़ थे, ये इश्वा-ओ-अदा[3]
दिल को दुआएं दो तुम्हें क़ातिल बना दिया

सब जिसे कहते हैं अरमानों का पूरा होना
मेरे नज़दीक यही मौत है अरमानों की

हर तरफ़ छा गए अरमाने-मोहब्बत बन कर
मुझसे अच्छी रही क़िस्मत मेरे अफ़सानों की

---

१. प्रेममार्ग की कठिनाइयां २. प्रकट ३. नाज-नखरे

इश्क़ ही तन्हा नहीं शोरीदासर[1] मेरे लिए
हुस्न भी बेताब है, और किस क़दर मेरे लिए

गर्म है हंगामा - ए - शामो - सहर[2] मेरे लिए
रात दिन गर्दिश में हैं शम्सो - क़मर[3] मेरे लिए

❦

क्या खाक सैर कीजै दुनिया - ए - रंगो - बू की[4]
मोहलत न आरज़ू की, फ़ुर्सत न जुस्तजू की

तुम दिल उसे समझ लो या जान आरज़ू की
सीने में अब से पहले इक बूंद थी लहू की

❦

मैं हूं उस मुक़ाम पर अब कि फ़िराक़ो-वस्ल[5] कैसे
मिरा इश्क़ भी कहानी, तिरा हुस्न भी फ़साना[6]

मिरी ज़िन्दगी तो गुज़री तिरे हिज्र[7] के सहारे
मेरी मौत को भी प्यारे कोई चाहिए बहाना

---

१. दीवाना २. सुब्ह-शाम के हंगामे (काल-चक्र) ३. सूरज और चांद ४. रंग और सुगंध के संसार की ५. बिछोह और मिलन ६. अफ़साना, कहानी ७. बिछोह

कभी शाख़ो - सब्ज़ा - ओ - बर्ग पर[1]
कभी गुंचा - ओ - गुलो - ख़्वार पर[2]
मैं चमन में चाहे जहां रहूं,
मेरा हक़ है फ़स्ले-बहार[3] पर

जिन्हें कहिए इश्क़ की वुसअ़तें[4],
जो हैं ख़ास हुस्न की अ़ज़्मतें[5]
ये उसी के क़ल्ब[6] से पूछिए,
जिसे फ़ख़्र हो ग़मे - यार पर[7]

दिल हुआ ख़ाक तपे-ग़म से[8] मगर दिल की जगह
इक ख़लिश सी मुझे मालूम हुई जाती है
हम तो समझे थे ग़मे - इश्क़ फ़ना कर देगा
अब ये उमीद भी मौहूम[9] हुई जाती है

मुझे उठाने को आया है वाइज़े-नादां[10]
जो उठ सके तो मिरा साग़रे - शराब[11] उठा
किधर से बर्क़[12] चमकती है देखें ऐ वाइज़
मैं अपना जाम उठाता हूं, तू किताब[13] उठा

---

१. शाखाओं, घास और पत्तियों पर २. कलियों, फूलों और कांटों पर ३. वसन्त ऋतु ४. विशालताएं ५. महानताएं ६. दिल ७. प्रेयसी के ग़म पर ८. ग़म की तपन से ९. भ्रामक १०. नादान धर्मोपदेशक ११. शराब का प्याला १२. बिजली (तूर नामक पहाड़ पर हज़रत मूसा को ख़ुदा ने बिजली के रूप में दर्शन दिए थे और कुछ हिदायतें लिखवाई थीं—उसीकी ओर संकेत है) १३. उन्हीं हिदायतों की पुस्तक (पवित्र ग्रंथ)

इश्क़ ने तोड़ी सर पे क़ियामत, ज़ोरे-क़ियामत[1] क्या कहिए
सुनने वाला कोई नहीं, रूदादे-मोहब्बत[2] क्या कहिए

जब से उसने फेर लीं नज़रें, रंगे-तबाही[3] आह ! न पूछ
सीना ख़ाली, आंखें वीरां[4], दिल की हालत क्या कहिए

जीने तक हैं होश के जल्वे आगे होश की मस्ती है
मौत से डरना क्या मानी[5] मौत भी जुज़्वे-हस्ती[6] है

मानी सूरत, सूरत मानी, फ़िक्रो-नज़र के[7] धोके हैं
फ़िक्रो-नज़र तक रह जाना, फ़िक्रो-नज़र की पस्ती[8] है

ये मज़ा था, खुल्द[9] में भी न मुझे क़रार होता
जो वहां भी आंख खुलती यही इन्तिज़ार होता

मिरे रश्के-बेनिहायत[10] को न पूछ मेरे दिल से
तुझे तुझसे भी छुपाता, अगर इख़्तियार होता

---

१. प्रलय का ज़ोर २. प्रेम का वृत्तान्त ३. कैसा तबाह हुआ ४. वीरान ५. मतलब ६. जीवन का अंग ७. दृष्टि और विचारों के ८. गिरावट ९. स्वर्ग १०. असीम ईर्ष्या

सुना है हश्र में[1] इक हुस्ने - आलमगीर[2] देखेंगे
ख़ुदा जाने तुझे या अपनी ही तस्वीर देखेंगे

रिहाई हो नहीं सकती कभी क़ैदे-तअल्लुक़ से[3]
जो इक ज़ंजीर टूटी, दूसरी ज़ंजीर देखेंगे

मुड़के फिर मैंने न देखा, हूं मैं ऐसा रह-नवर्द[4]
देखती ही रह गई हसरत से मुंह मंज़िल मिरा

बेदिली पे क्यों हिरासां[5] हूं कि है मुझको ख़बर
ख़ुद निगाहे-नाज़[6] ही इक दिन बनेगी दिल मिरा

कुछ दाग़े-दिल से[7] थी मुझे उमीद इश्क़ में
सो रफ़्ता - रफ़्ता[8] वो भी चिराग़े-सहर[9] हुआ

फ़र्याद कैसी, किसकी शिकायत, कहां का हश्र[10]
दुनिया उधर को टूट पड़ी वो जिधर हुआ

---

१. महाप्रलय में २. विश्वव्यापी सौन्दर्य ३. संबंध-रूपी क़ैद से ४. पथिक ५. भयभीत ६. प्रेयसी की नजर ७. दिल के दाग़ से ८. धीरे-धीरे ९. सुबह का दीपक (बुझने वाला) १०. महाप्रलय

८४८

तुम मुझसे छूटकर रहे सबकी निगाह में
मैं तुमसे छूटकर किसी क़ाबिल नहीं रहा

दिल को न छेड़ ऐ ग़मे-फ़ुर्क़त[1] कि अब ये दिल
तेरे भी इल्तिफ़ात के[2] क़ाबिल नहीं रहा

घड़ी भर में नाआशना[3] हो गया
न जाने मेरे दिल को क्या हो गया

धड़कने लगा दिल, नज़र झुक गई
कभी उनसे जब सामना हो गया

तिरी याद की उफ़ ये सरमस्तियां
कोई जैसे पीकर शराब आ गया

मिरा उनका बनना - बिगड़ना ही क्या
निगाहे मिलीं और हिजाब[4] आ गया

---

१. बिछोह के दुःख २. आकृष्टि, कृपा के ३. अपरिचित
४. लज्जा

यूं दिल के तड़पने का कुछ तो है सबब आख़िर
या दर्द ने करवट ली या तुमने इधर देखा

क्या जानिए क्या गुज़री, हंगामे-जुनूं[1] लेकिन
कुछ होश जो आया तो उजड़ा हुआ घर देखा

मुझको वो लज़्ज़त[2] मिली, एहसास[3] मुश्किल हो गया
रहते-रहते दिल में तेरा दर्द भी दिल हो गया

इब्तिदा[4] वो थी कि था जीना मोहब्बत में मुहाल[5]
इन्तिहा[6] ये है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया

अर्सा - ए - हश्र[7] कहां, ये दिले-बर्बाद कहां
वो भी छोटा - सा है टुकड़ा इसी वीराने का

उसकी तस्वीर किसी तरह नहीं खिच सकती
शम्अ़ के साथ तअ़ल्लुक़ है जो परवाने का

---

१. उन्माद के समय २. आनन्द ३. अनुभूति ४. प्रारम्भ ५. कठिन ६. चरम सीमा ७. प्रलय-क्षेत्र

हम और उनके सामने अर्ज़े-नियाज़े-इश्क़[1]
लेकिन हुजूमे-इश्क़ से मजबूर हो गए

आई है मौत मंज़िले-मक़सूद देखकर
इतने हुए क़रीब कि हम दूर हो गए

कोई न बच सका, तिरी क़ातिल निगाह से
ज़र्रे भी सदक़े हो गए उठ-उठ के राह से

ये जानता हूं, जानते हो मेरा हाले-दिल
ये देखता हूं, देखते हो किस निगाह से

क़ह्र की[2] लाख निगाहों की ज़रूरत क्या है
लुत्फ़ की[3] एक निगहे-नाज़[4] न जीने देगी

चैन आता ही नहीं मुझको क़फ़स में[5] या रब
क्या मिरी हसरते-परवाज़[6] न जीने देगी

---

१. प्रेम की आकांक्षा की प्रार्थना २. प्रकोप की ३. स्नेह की ४. नाज़-भरी नज़र ५. नीड़ में ६. उड़ने की आकांक्षा

वक़्त आता है इक ऐसा भी मोहब्बत में कि जब
दिल पे एहसासे-मोहब्बत[1] भी गरां[2] होता है

कहीं ऐसा तो नहीं वो भी हो कोई आज़ार
तुझ को जिस चीज़ पे राहत[3] का गुमां[4] होता है

शोरिशे-कायनात[5] ने मारा
मौत बनकर हयात[6] ने मरा

जो पड़ी दिल पे सह गए लेकिन
एक नाज़ुक सी बात ने मारा

तस्कीने-रूह[7] जब न किसी तरह हो सकी
सब अपनी-अपनी धुन में लगे कुछ पुकारने

तकलीफ़ो-पर्दादारी-ए-तकलीफ़ अलअमां[8]
मारा है मुझको खुद मिरे सब्रो-क़रार ने

१. प्रेम की अनुभूति २. भारी ३. आनन्द ४. भ्रम, खयाल ५. ब्रह्माण्ड के कोलाहल ६. जीवन ७. आत्मा की शान्ति ८. कष्ट सहना और फिर कष्ट पर पर्दा भी डालना, कितना असह्य है यह !

वही है ज़िन्दगी लेकिन जिगर ये हाल है अपना
कि जैसे ज़िन्दगी से ज़िन्दगी कम होती जाती है

तिरी अमानते-ग़म[१] का तो हक़ अदा कर लूं
ख़ुदा करे शबे-फ़ुर्क़त[२] अभी दराज़[३] रहे

गुज़रती है जो दिले-इश्क़ पर न पूछ 'जिगर'
ये ख़ास राज़े-मोहब्बत है राज़ रहने दे

ज़िन्दगी इक हादिसा है और कैसा हादिसा
मौत से भी ख़त्म जिस का सिलसिला होता नहीं

मोहब्बत क्या है, तासीरे-मोहब्बत[४] किसको कहते हैं
तिरा मजबूर कर देना, मिरा मजबूर हो जाना

बहुत हसीं[५] सही सोहबतें गुलों की[६], मगर
वो ज़िन्दगी है जो कांटों के दर्मियां गुज़रे

---

१. गम-रूपी अमानत २. बिछोह की रात ३. लम्बी ४. प्रेम का प्रभाव ५. हसीन, सुन्दर ६. फूलों की

किस-किस पे जान दीजिए, किस-किस को चाहिए
गुम हो गए हैं बज़्मे - तमन्ना में[1] आ के हम

सख़्त मुश्किल से पड़ा आज गिरेबान पे हाथ
मैं समझता था कि ये फ़ासला कुछ दूर नहीं

ले के ख़त उनका किया ज़ब्त बहुत कुछ लेकिन
थरथराते हुए हाथों ने भरम खोल दिया

क्या जानिए, कब तक मुझे फ़ुर्क़त में[2] कल[3] आए
दिल को अभी रोका था कि आंसू निकल आए

सहर तक[4] शमए-महफ़िल ! मैंने[5] जल बुझने की ठानी है
हमें ये देखना है, ख़ाक हो जाते हैं हम कब तक

मोहब्बत में 'जिगर' गुज़रे हैं ऐसे भी मुक़ाम[6] अकसर
कि ख़ुद लेना पड़ा है, अपने दिल से इंतिक़ाम[7] अकसर

---

१. अभिलाषाओं की सभा (समूह) में २. बिछोह में ३. चैन ४. सुबह तक ५. महफ़िल के दीपक ६. स्थितियां ७. बदला, प्रतिशोध

अक़्ल बारीक[1] हुई जाती है
रूह तारीक[2] हुई जाती है

उन को बुला के और पशेमां[3] हुए 'जिगर'
ये क्या ख़बर थी होश में आया न जाएगा

ह्श्र के दिन वो गुनह्गार न बख़्शा जाए
जिसने देखा तेरी आंखों का पशेमां होना

दिल पे तारी[4] बेहिसी-ओ-ज़ो'फ़[5] का आ़लम[6] हुआ
घट गई उतनी ही ताक़त दर्द जितना कम हुआ

कुछ खटकता तो है पह्लू में मिरे रह-रहकर
अब ख़ुदा जाने तिरी याद है या दिल मेरा

इश्क़ में सैरे - गुले - लाला[7] है तमहीदे - जुनूं[8]
चाहिए एक बियाबां भी गुलिस्तां के क़रीब

---

१. सूक्ष्म २. अंधकारमय ३. लज्जित ४. छा गया ५. निश्चेष्टता तथा दुर्बलता ६. स्थिति ७. फूलों (वाटिका) की सैर ८. उन्माद की भूमिका या प्रारंभ

हुस्न की इक-इक अदा पर जानो-दिल सदक़े[1] मगर
लुत्फ़ कुछ दामन बचा कर ही गुज़र जाने में है

तन्हाई-ए-फ़िराक़ में[2] क्यों गिरिया[3] कीजिए
ऐ दिल ! ये वक़्ते-ख़ास है राज़ो - नियाज़ का[4]

दिखा कर इक झलक सामाने-राहत[5] जिसने लूटा था
निगाहें ढूंडती हैं फिर उसी ग़ारतगरे-जां को[6]

कहते हैं जिसे अहले-नज़र[7] होश की दुनिया
कुछ-कुछ है ख़बरदार मिरी बेख़बरी से

बहुत रोका तिरे वादा - ए - दीदार ने[8] वर्ना
वहां होती न मेरी बेख़ुदी[9] भी मैं जहां होता

उसकी आला-हिम्मती[10] का क्या ठिकाना ऐ 'जिगर'
तंग हो जिसके लिए फ़र्याद भी, तासीर[11] भी

---

१. न्योछावर २. बिछोह के एकाकीपन में ३. आर्तनाद ४. प्रेम-सम्बन्धी परस्पर बातचीत का ५. सुख-सामग्री ६. जीवन मिटाने वाले को ७. पारखी ८. दर्शन देने के वायदे ने ९. आत्मविस्मृति १०. महान साहस ११. प्रभाव

वही है इश्क़, वही हुस्न है, वही सब कुछ
मगर किसी से किसी का जवाब हो न सका

हुस्न खुद इश्क़ की सूरत में मुकाबिल[1] आए
काश ऐसा हो कि तुझ पर ही तिरा दिल आए

जब नज़र अपनी हक़ीक़त[2] आई
मुझे पे खुद मेरी तबीयत आई

निहां किए से[3] नहीं राज़े-ग़म निहां होता
ज़बां दहन[4] में न होती तो मैं ज़बां होता

पर्वर्दा-ए-तूफ़ां को[5] कश्ती की नहीं हाजत[6]
मौजों के[7] तलातुम में साहिल नज़र आता है

छुप के पहरों उसे ऐ देखने वाले ये बता
मुझ में क्या बात नहीं, जो मेरी तस्वीर में है

---

१. सामने २. वास्तविकता ३. निहित करने (छिपाने) से ४. मुंह ५. तूफ़ानों द्वारा पाले हुए को ६. ज़रूरत ७. लहरों के

एक नज़्म

साक़ी से ख़िताब

कहां से बढ़के पहुंचे हैं कहां तक इल्मो-फ़न[1] साक़ी
मगर आसूदा[2] इन्सां का न तन साक़ी न मन साक़ी

ये सुनता हूं कि प्यासी है बहुत ख़ाके-वतन साक़ी
ख़ुदा हाफ़िज़ चला मैं बांधकर सरसे कफ़न साक़ी

सलामत तू, तिरा मैख़ाना, तेरी अंजुमन साक़ी
मुझे करनी है अब कुछ ख़िदमते-दारो-रसन[3] साक़ी

रगो-पै में[4] कभी सहबा[5] ही सहबा रक़्स करती थी
मगर अब ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है मौजज़न[6] साक़ी

न ला वस्वास[7] दिल में, जो हैं तेरे देखने वाले
सरे-मक़तल[8] भी देखेंगे चमन-अन्दर-चमन साक़ी

तिरे जोशे-रक़ाबत का[9] तक़ाज़ा कुछ भी हो लेकिन
मुझे लाज़िम नहीं है तर्के-मन्सब[10] दफ़अ़तन[11] साक़ी

---

१. ज्ञान और कलाएं २. सम्पन्न, सन्तुष्ट ३. सूली और बेड़ियों की सेवा, अर्थात् मुझे सामाजिक बन्धनों को तोड़ना है, भले ही क़ैद या सूली का दण्ड मिले। ४. नस-नस में ५. शराब ६. लहरें लेती है ७. सन्देह ८. वधस्थल पर ९. प्रतिद्वन्द्विता के जोश का १०. अपने उच्च पद को त्याग देना ११. एकाएक

पासे-अदब से[1] छुप न सका राज़े-हुस्नो-इश्क़[2]
जिस जा[3] तुम्हारा नाम सुना सर झुका दिया

जिसमें आबाद थी दुनिया-ए-मोहब्बत
हाय उस अश्क़[4] का आंखों से जुदा होना

रब्ते-बातिन[5] इसको कहते हैं कि रोज़े-अव्वलीं[6]
रूह मुज़्तर ही रही जब तक न ग़म पैदा हुआ

ये सारी लज़्ज़तें[7] हैं, मेरे शौक़े-नामुकम्मल[8] तक
क़ियामत[9] थी ये पैमाना[10] अगर लबरेज़ हो जाता[11]

तिरे फ़िराक़[12] ने बचा लिया सब से
मिरे क़रीब अब कोई बला नहीं आती

क्या-क्या ख़यालो-वहम[13] निगाहों पे छा गए
जी धक से हो गया, ये सुना जब वो आ गए

---

१. विनम्रशीलता से २. सुन्दरता और प्रेम (प्रेयसी और प्रेमी) का भेद ३. जगह ४. आंसू ५. अन्तरात्मा का सम्बन्ध ६. आदि-दिवस ७. आनन्द ८. अपूर्ण अभिरुचि ९. महाप्रलय १०. शराब का प्याला ११. भर जाता १२. बिछोह १३. विचार तथा भ्रम

ये महफ़िले-हस्ती[1] भी क्या महफ़िले-हस्ती है
जब कोई उठा पर्दा, मैं ख़ुद ही नज़र आया

क्या जानिए ख़याल कहां है नज़र कहां
तेरी ख़बर के बाद फिर अपनी ख़बर कहां

दुनिया ये दुखी है फिर भी मगर, थक कर ही सही, सो जाती है
तेरे ही मुक़द्दर[2] में ऐ दिल, क्यों चैन नहीं, आराम नहीं

अब भी क्या दिल को न समझोगे सज़ावारे-सज़ा[3]
मुज्रिमे-शौक़[4] भी है, मुल्ज़मे-फ़र्याद[5] भी है

तिरा मिलना तो मुमकिन था मगर ऐ जाने-महबूबी[6]
मिरे नज़दीक तौहीने - मज़ाके - जुस्तजू[7] होती

ख़ुदा जाने मोहब्बत कौन सी मंज़िल को कहते हैं
न जिस की इब्तिदा ही है, न जिसकी इन्तिहा ही है

---

१. जीवन की महफ़िल २. भाग्य ३. दण्ड के योग्य ४. इश्क़ करने का अपराधी ५. फ़र्याद करने का अपराधी ६. ख़ुदा ७. ढूंढ़ने की अभिरुचि का अपमान

एक और ग़ज़ल

शबे-फ़िराक़[1] है और नींद आई जाती है
कुछ इसमें उनकी तवज्जोह-सी पाई जाती है

गुनाहगार के दिल से न बच के चल ज़ाहिद[2]
यहीं-कहीं तिरी जन्नत भी पाई जाती है

न सोज़े-इश्क़[3], न बर्क़े-जमाल[4] पर इल्ज़ाम
दिलों में आग ख़ुशी से लगाई जाती है

सुकूं[5] है मौत यहां ज़ौक़े - जुस्तजू[6] के लिए
ये तश्नगी[7] वो नहीं, जो बुझाई जाती है

वो चीज़ कहते हैं फ़िर्दौसे-गुमशुदा[8] जिसको
कभी-कभी तिरी आंखों में पाई जाती है

क़रीब मंज़िले-आख़िर[9] है अलफ़िराक़[10] 'जिगर'
सफ़र तमाम हुआ, नींद आई जाती है

---

१. बिछोह की रात २. विरक्त ३. प्रेमाग्नि ४. सौन्दर्य-विद्युत्
५. शान्ति ६. तलाश की अभिरुचि ७. तृष्णा ८. खोया हुआ स्वर्ग
९. अंतिम मंज़िल १०. विदा

एक नज़्म

साक़ी से ख़िताब

कहां से बढ़के पहुंचे हैं कहां तक इल्मो-फ़न[1] साक़ी
मगर आसूदा[2] इन्सां का न तन साक़ी न मन साक़ी

ये सुनता हूं कि प्यासी है बहुत ख़ाके-वतन साक़ी
ख़ुदा हाफ़िज़ चला मैं बांधकर सरसे कफ़न साक़ी

सलामत तू, तिरा मैख़ाना, तेरी अंजुमन साक़ी
मुझे करनी है अब कुछ ख़िदमते-दारो-रसन[3] साक़ी

रगो-पै में[4] कभी सहबा[5] ही सहबा रक़्स करती थी
मगर अब ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है मौजज़न[6] साक़ी

न ला वस्वास[7] दिल में, जो हैं तेरे देखने वाले
सरे-मक़तल[8] भी देखेंगे चमन-अन्दर-चमन साक़ी

तिरे जोशे-रक़ाबत का[9] तक़ाज़ा कुछ भी हो लेकिन
मुझे लाज़िम नहीं है तर्के-मन्सब[10] दफ़अ़तन[11] साक़ी

---

१. ज्ञान और कलाएं २. सम्पन्न, सन्तुष्ट ३. सूली और बेड़ियों की सेवा, अर्थात् मुझे सामाजिक बन्धनों को तोड़ना है, भले ही क़ैद या सूली का दण्ड मिले। ४. नस-नस में ५. शराब ६. लहरें लेती है ७. सन्देह ८. वधस्थल पर ९. प्रतिद्वन्द्विता के जोश का १०. अपने उच्च पद को त्याग देना ११. एकाएक

अभी नाक़िस[1] है मेयारो-जुनूं[2] तन्ज़ीमे-मैख़ाना[3]
अभी ना-मो'तबर[4] है तेरे मस्तों का चलन साक़ी

वही इन्सां, जिसे सरताजे-मख़्लूक़ात[5] होना था
वही अब सी रहा है अपनी अ़ज़्मत का[6] कफ़न साक़ी

लिबासे-हुर्रियत के[7] उड़ रहे हैं हर तरफ़ पुर्ज़े
बिसाते-आदमियत[8] है शिकन-अन्दर-शिकन[9] साक़ी

मुझे डर है कि इस नापाकतर[10] दौरे-सियासी में[11]
बिगड़ जाए न ख़ुद मेरा मज़ाक़े-शे'रो-फ़न[12] साक़ी

---

१. अपूर्ण २. उन्माद का स्तर ३. मधुशाला का प्रबन्ध ४. अविश्वसनीय ५. प्राणियों का शिरोमणि ६. महानता का ७. राष्ट्रीयता-रूपी लिबास के ८. मानवता-रूपी बिछौना ९. सलवट-दर-सलवट १०. अति अपवित्र ११. राजनीतिक युग में १२. काव्य-कला की रुचि का स्तर

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, दिल्ली-११००३२ ११२०५